निवेदन

प्यारे पाठको!

वसन्तराजके आगमन होतेही मनोहर वनराजी प्रफु-
ल्लित होकर अपनी अपूर्व छटाको दिखाती है और चारो
तर्फसे हरियाली लिये हुवे मनोरंजन क्यारियोंमें तरह
तरहके फूल खिले हुवे दिखलाई देते हैं जिनकी मधुर
सुगंधिसे मस्त हुवे भमरोंकी गुंजारव मनको अपनीही
ओर खैंचती है इसी तरह ज्ञानरूपी उद्यानमे मिथ्यात्वरूपी
तमको नाश करनेवाले जिनराजकी उपदेश ध्वनीके होतेही
भव्यरूपी वनराजी चारों ओरसे दिप्यमायमान होकर
उसमें तरह २ के ज्ञानरूपी पुष्पोंको धारण करनेवाले
मुनिगणरूपी वृक्ष हरेभरे और प्रफुल्लित दिखाई देतेथे, जि-
नकी स्याद्वाद और नयरूपी मधुर सुगंध आज पर्यन्त फैल
रही है. उन्ही पुष्पोंमेसे यह एक पुष्प आज आप लोगोंके
करकमलमें रखता है, इसको हितताके साथ ग्रहण कि
[illegible]

इस पुस्तकमें जो २ विषय लिखा गया है, वह बहुतही गंभीर आशययुक्त है. जितना विस्तार करना चाहो, उतनाही हो सक्ता है. परन्तु वह सब कर्त्ताने पाठकोंकी बुद्धिपर रक्खा है. इसलिये यदि अच्छीतरह विचारपूर्वक इसको जितनाही वार पढोगे उतनाही विशेष २ ज्ञान प्राप्त होता रहेगा.

ग्रंथकर्त्ताका मुख्य उपदेश यह है के, इस पुस्तकको पाठक कंठस्थ करें. और इसी उद्देशसे इसको संक्षेप शैलीसे लिखाभी है; जिससे अभ्यासी सुगमतासे याद कर सकें. दृष्टिदोषसे कहीं न्यूनाधिक लिख गया हो, उसे वाचकवृन्द सुधार लेंगे. सुज्ञेषु किं बहुना.

भवदिय,
मेघराज मुणोत फलोधीवाला.
मु. खैरागढ सी. पी.



का सम्बंध अनंत कालसे लगा हुवा है.

मगल भ कार्य कारणसे न्यूनाधिक भी होता रहता है.

मगल र ३ है, वहा क्या दर्शनावरणीय है. एवम्

, कर्म ?

। समझलेना. जहां (नि) हो वहा नियमा

रा भजना (हो या न भी हो) समझना इति

	दर्श	वेदनी	मोह	आयु	नाम	गोत्र	अंतराय.
लोकके आकाश		नि	भ	नि	नि	नि	नि
असख्याते है.		नि	भ	नि	नि	नि	नि
एक जीवके आ		•	भ	नि	नि	नि	भ
असख्याते है (		नि	•	नि	नि	नि	नि
		नि	भ	•	नि	नि	भ
एक जीवके आत		नि	भ	नि	•	नि	भ
कर्मकी प्रकृति कित		नि	भ	नि	नि	•	[illegible]
आठ—यथा ज्ञानाव			भ	नि	नि	नि	•

आयुष्य, नाम, गोत्र

ने समेतसत्वम्

थोकडा नं. २.

श्री पन्नवणाजी सूत्र. पद २३

(अबाधाकाल.)

कर्मकी मूल प्रकृति आठ है, और उत्तर प्रकृति १४८ है. कौन जीव किस २ प्रकृतिको कितने २ स्थितिकी बांधता है, और बांधनेके बाद स्वभावसे उदयमें आवे तो, कितने कालसे आवे, यह सब इस थोकडेद्वारा कहेंगे. और जो इस थोकडेको कंठस्थ कर लेगा, उसके प्रथम कर्मग्रंथ भी सामान्यतासे कंठस्थ हो जायगा.

अबाधाकाल उसे कहते हैं. जैसे हुंडीकी मुदत पकजानेपर रुपिया देना पडता है, वैसेही कर्मका अवधाकाल पूर्ण होनेपर कर्म उदयमें आते हैं. उस वख्त भोगना पडता है, हुंडीकी मुद्दत पकने के पहिलेही रुपिया दे दिया जाय, तो लेनदार मांगनेको नहीं आता. इसी तरह कर्मोंके अबाधाकालसे पूर्व तप संयमादिसे कर्म क्षय कर दिये जाय तो, कर्मविपाकों भोगने नहीं पडते. (अर्जुनमालीवत्)

अबाधाकाल ४ प्रकारका है यथा

(१) जघन्य स्थिति और जघन्य अबाधाकाल. जैसे दसमें गुणस्थानकमें अंतरमुहूर्त स्थितिका कर्मबंध होता है, और उसका अबाधाकाल भी अंतरमुहूर्तका है.

(२) उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अबाधाकाल जैसे मोहनीयकर्म उ० स्थिति ७० कोडाकोडी सागरोपमकी है. और अबाधाकाल भी ७००० वर्षका है.

(३) जघन्य स्थिति और उत्कृष्ट अबाधाकाल. जैसे मनुष्य, तिर्यच, क्रोड पूर्वका आयुष्यवाला क्रोड पूर्वके तीसरे भागमें मनुष्य या तिर्यच गतिका जघ॰ आयुष्य बांधे

(४) उत्कृष्ट स्थिति और जघन्य अबाधाकाल जैसे ॰॰॰ (छेके) अंतरमुहूर्तमें ३३ सागरोपमका उ॰ नरकायु. आयुष्य बांधे

मूल कर्म कितने है ?

आठ-ज्ञानावरणीय १ दर्शनावर्णीय २ वेदनी ३ मोहनीय ४ आयुष्य ५ नाम ६ गोत्र ७ अन्तराय ८ समुच्चय २४ दंडकमें जीवोंके आठो कर्म है.

मूल आठो कर्मोंकी उत्तर प्रकृति कितनी है?

१४८* यथा ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणीय ९ वेदनीय २ मोहनीय २८ आयुष्य ४ नामकर्म ९३ गोत्रकर्म २ और अंतराय कर्मकी ५ एवम् १४८. जीस्मे मोहनीय कर्मकी २८ प्रकृतिमेंसे सम्यक्त्व मोहनीय और मिश्र मोहनीयका बंध नहीं होता. बाकी १४६ प्रकृति बंधती है.

उत्तर प्रकृति १४६ की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति और अबाधाकाल कितना २ तथा बंधाधिकारी कौन २ है?

मतिज्ञानावरणीय १ श्रुत ज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञानावरणीय ३ मनपर्यव ज्ञानावरणीय ४ केवल ज्ञा० ५ चक्षु द० ६ अचक्षु द० ७ अवधि द० ८ केवल द० ९ दानांतराय १० लाभा० ११ भोगा० १२ उपभोगा० १३ वीर्या० १४ इन चउदे प्रकृतियोंको समुचय जीव बांधे तो जघन्य अंतरमुहूर्त तथा निद्रा १ निद्रानिद्रा २ प्रचला ३ प्रचला प्रचला ४ थीणद्धी ५ और असातावेदनीय ६ यह छे प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो, जघन्य १ सागरोपमका

* कर्मग्रंथमें १५८ भी कही है अपेक्षा वचन समजना.

मानिया. तीन भाग पल्योपमके असंख्यातवें भाग ऊणा (न्यून) और उत्कृष्ट स्थिती। इन [illegible] प्रकृतियोंका ७० कोडाकोडी सागरोपम और अबाधाकाल ७ हजार वर्षका है. यही तीन प्रकृति एकेंद्री बांधे तो जघन्य १ सागरोपम पल्योपमके असंख्यातवें भाग ऊणी बेइन्द्री जघन्य २५ सा० पल्यो० के असं० भाग ऊणी. तेइन्द्री ५० सा० पल्यो० के असं० भाग ऊणी चौरिंद्री १०० साग० पल्यो० के असं० भाग ऊणी और असन्नी पचेन्द्री १ हजार साग० पल्योपमके असंख्यातवें भाग ऊणी बांधे. तथा उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्री १ सागरोपम, बेइन्द्री २५ साग० तेइन्द्री ५० साग० चौरिन्द्री १०० साग० असन्नी पचेंद्री १ हजार साग० और सन्नी पचेन्द्री जघन्य १४ प्रकृति अन्तर्मुहूर्त और ६ प्रकृति अंत कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे. उत्कृष्ट बीसों प्रकृतिकी स्थिति और अबाधाकाल पूर्ववत्।

एक कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति पीछे सामान्यसे १ सौ वर्षका अबाधाकाल है. एसेही एकेन्द्रियादिक सबमें समझ लेना

अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, अप्रत्याख्यानी

क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, और संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, इन सोलह प्रकृतियोंमेंसे प्रथमकी १२ प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो, जघन्य १ सागरोपमका सातिया ४ भाग पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊंणी. और संज्वलनका क्रोध २ महीना. मान १ महीना, माया १५ दिन और लोभ अंतरमुहूर्तका बांधे. उत्कृष्ट १६ प्रकृतिका स्थितिबंध ४० कोडाकोडी सागरोपम. और अबाधाकाल ४ हजार वर्षका है ॥ यही सोलह प्रकृति एकेन्द्री जघन्य १ साग० बेइन्द्री २५ सा० तेइन्द्री ५० साग० चौरिंद्री १०० साग० असंज्ञी पंचेन्द्री १ हजार साग० पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊंणी सर्व स्थान और उत्कृष्ट सब जीव पूरी २ बांधे, संज्ञी पंचेन्द्री १२ प्रकृति जघन्य अंतः कोडाकोडी सागरोपम तथा ४ प्रकृति पहिले लिखी उस मुजब बांधे. और उत्कृष्ट सोलहों प्रकृतिका स्थितिबंध पूर्ववत्.

भय १ शोक २ जुगुप्सा ३ अरति ४ नपुंसक वेद ५ नरकगति ६ त्रियंचगति ७ एकेन्द्री ८ पंचेन्द्री ९ औदारिक शरीर १० तस्य बंधन ११ अंगोपांग १२ और संघातन १३

क्रियशरीर १४ तस्य बधन १५ अगोपाग १६ तथा सघा
तन १७ तैजस शरीर १८ तस्यबधन १९ सघातन २०
कारमण शरीर २१ कारमण शरीरका बधन २२ तस्य
सघातना २३ छेवट्ठसहनन २४ हुडक सस्थान २५ कृष्ण
वर्ण २६ तिक्तरस २७ दुरभिगध २८ करकश स्पर्श २९
गुरु स्पर्श ३० शीत स्पर्श ३१ रुक्ष स्पर्श ३२ नरकानुपूर्वी
३३ तिर्यचानुपूर्वी ३४ अशुभगति ३५ उश्वास ३६ उद्योत
३७ आतप ३८ पराघात ३९ उपघात ४० अगुरु लघु ४१
निर्माण ४२ त्रस ४३ बादर ४४ पर्याप्ता ४५ प्रत्येक ४६
अस्थिर ४७ अशुभ ४८ दुरभाग्य ४९ दु:स्वर ५० अयश
५१ अनादेय ५२ स्थावर ५३ और नीचगोत्र ५४ एवम्
चौपन प्रकृति मनुष्य जीव बाधै सो. जघन्य ? सागरोप
मका सातिया २ भाग पल्योपमके असख्यातवे भाग ऊणा
और उत्कृष्ट २० कोडाकोडी सागरोपम अबाधाकाल २
हजार वर्षका हो यही प्रकृति एकेन्द्री जघन्य १ साग०
बेइन्द्री २५ साग० तेइन्द्री ५० साग० चौरिन्द्री १००
साग० असज्ञी पचेन्द्री १ हजार साग० पल्योपमके असं-
ख्यातवे भाग ऊणा सर्व स्थान और उत्कृष्ट पूरी बाध

संज्ञी पंचेन्द्री जघन्य अंतः कोडाकोडी साग० उत्कृष्ट पूर्वो-
क्तवत्.

हास्य १ रति २ पुरुषवेद ३ देवगति ४ वज्रऋषभ नाराच संघयण ५ सम चतुरस संस्थान ६ लघु स्पर्श ७ मृदुस्पर्श ८ उष्ण स्पर्श ९ स्निग्ध स्पर्श १० स्वेतवर्ण ११ मधुरस १२ सुरभिगंध १३ देवानुपूर्वी १४ शुभगति १५ स्थिर १६ शुभ १७ सोभाग्य १८ सुःस्वर १९ आदेय २० यशः कीर्ति २१ और उच्चैर्गोत्र २२ एवम् २२ प्रकृति जिसमें पुरुष वेद ८ वर्षका. यशः कीर्ति और उच्चैर्गोत्र इन दोनों प्रकृतियोंकी जघन्य स्थिति ८ महूर्त शेष १९ प्रकृतियोंकी ज० स्थिती एक सागरोपमका सातिया १ भाग पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊंणी, और २२ प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट स्थिति १० कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे. अबाधाकाल १ हजार वर्ष ॥ एकेन्द्रीसे यावत् असंज्ञी पंचेन्द्री पूर्ववत् १–२५–५०–१००–१००० साग० प० अ० ऊणी. संज्ञी पंचेन्द्री ३ प्रकृति समुच्चयवत्. और १९ प्रकृति अंतः कोडाकोडी सागरोपम तथा उत्कृष्ट स्थिति २२ प्रकृतिकी पूर्ववत्.

स्त्रीवेद १ *साता वेदनीय २ मनुष्यगति ३ रक्तवर्ण ४ कषायरस ५ मनुष्यानुपूर्वी ६ इन छ प्रकृतियोंमेसे साता वेदनीयका जघन्यबंध १२ मुहूर्त और शेष पांच प्रकृतियोंका जघन्य स्थितिबंध १ सागरोपमका सातिया १ ॥ भाग प० अ० उणी उत्कृष्ट छ प्रकृतिका बंध १५ कोडाकोडी सागरोपम और अबाधाकाल १५ सौ वर्षका है

एकेन्द्री यावत् असज्ञी पचेन्द्री पूर्ववत् १-२५-५० १००-१००० सा० और सज्ञी पचेन्द्री सातावेदनीय जघन्य १२ मुहूर्त शेष पांच प्रकृति जघन्य अंतः कोडाकोडी साग० की बांधे उत्कृष्ट बंध समुच्चयवत्

बेइन्द्री १ तेइन्द्री २ चौरिन्द्री ३ सूक्ष्म ४ साधारण ५ अपर्याप्ता ६ कीलिकासंहनन ७ और कुब्जसंस्थान ८ ये आठ प्रकृति समुच्चय जीव जघन्य १ सागरोपमका पैंतीसीया ९ भाग पल्योपमके असंख्यातमें भाग उणी, और उत्कृष्ट १८ कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे अबाधाकाल १८०० वर्षका । एकेन्द्री यावत् असज्ञी पचेन्द्री पूर्ववत्

* सातावेदनीय २ प्रकारकी १ इर्यावही पहिले समय बांधे दूसर समय वेद, और तीज समय निर्जरे सम्परायकी समुच्चयवत्

६-२५-५०-१००-१००० सागरोपम, प० संज्ञी पंचेन्द्री जघन्य अंतः कोडाकोडी सागरोपम उत्कृष्ट समुच्चयवत्.

आहारक शरीर १ तस्य बंधन २ अंगोपांग ३ संघातन ४ और जिननाम ५ ये पांच प्रकृति समुच्चय बांधे तो, जघन्य अंतरमुहूर्त उत्कृष्ट अंतः कोडाकोडी सागरोपम. एवम् संज्ञी पंचेन्द्री ॥

मिथ्यात्व मोहिनी समुच्चयजीव बांधे तो, जघन्यबंध १ सागरोपम उत्कृष्ट ७० कोडाकोडी साग० अ० काल ७ हजार वर्ष. एकेन्द्री यावत् पंचेन्द्री पूर्ववत्. और संज्ञी पंचेन्द्री जघन्य अंतः कोडाकोडी सागरोपम. उत्कृष्ट समुच्चयवत्.

ऋषभनाराच संहनन १ न्यग्रोध संस्थान २ ये दो प्रकृति समुच्चय जीव बांधे तो, जघन्य १ सागरोपमका पैंतीसिया ६ भाग पल्योपमके असंख्यातमें भाग ऊणी. उत्कृष्ट १२ कोडाकोडी सागरोपमकी बांधे. अबाधाकाल १२०० वर्ष. एकेन्द्री यावत् असंज्ञी पंचेन्द्री पूर्ववत्. संज्ञी पंचेन्द्री जघन्य अंतः कोडाकोडी सागरोपम. उत्कृष्ट समुच्चयवत्.

नाराच संहनन १ और सादि संस्थान २ ये दो प्रकृति

समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य १ सागरोपम के पैंतीसिया ७ भाग उत्कृष्ट १४ कोडा कोड सागरोपम अबाधा काल १४०० वर्ष एकेंद्री यावत् असज्ञी पचेंद्री पूर्व वत् सज्ञी पचेंद्री जघन्य अन्तः कोडा कोड सागरोपम उ० पूर्ववत् ।

अर्द्ध नाराच सेंहनन और वामन सँस्थान ए दो प्रकृति समुच्चयजीव बाधे तो ज० १ सागरोपम के पैंतीसीया ८ भाग उ० १६ कोडा कोड सागरोपम-अबाधा काल १६०० वर्ष शेष पूर्ववत् ।

नील वर्ण और कटुक रस ए दो प्रकृति समु० जीव बाध तो जघन्य एक सगरोपम के अठावीसीया ७ भाग उ० १७॥ कोडा कोड सगरोपम अबाधा काल १७५० वर्ष शेष पूर्व वत्

पंच वर्ण और आंबिल रस ए दो प्रकृति समु० जीव बाधतो जघन्य एक सागरोपम के अठावी सीया ५ भाग उ० १२॥ कोडा कोड सागरोपम अबाधाकाल १२५० वर्ष शेष पूर्ववत् ।

नरकायुः और देवायुः ए दो प्रकृति, पंचेंद्री बांधेतो जघन्य १०००० वर्ष उ०३३ सागरोपम अबाधा काळ ज० अन्तर महुर्त उ० कोड पूर्व के तीजे भाग।

तीर्यंचायुः और मनुष्यायुः ए दो प्रकृति बांधेतो जघन्य अन्तर मुहूर्त उ० ३ पलोपम अबाधा काल ज० अन्तर० उ० कोड पूर्व के तीजे भाग इसी को कण्ठस्थ करो और विस्तार गुरु मुख से सुनो सेवं भन्ते, सेवं भन्ते।

तमेव सच्चम्.

थोकड़ा नं० ३

(सूत्र श्री पन्नवणाजी पद २४)

(बांध तो बांधे)

मूल कर्म प्रकृति आठ हैं यथा ज्ञान वर्णीय, दर्शना वर्णीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम कर्म, गोत्र कर्म अन्तराय कर्म ॥

वेदनीय कर्म का बंध प्रथम से तेरवा गुणस्थान तक है

ज्ञाना वर्णीय, दर्शना, नाम कर्म गोत्र, और अन्तराय ए पाच कर्मों का बंध प्रथम से दशवा गुणस्थान तक है

मोहनीय कर्म का बंध प्रथम से नवमा गुणस्थान तक है

आयुष्य कर्म का बंध प्रथम से सातमा गुणस्थान तक है

• समुच्चय एक जीव ज्ञाना वर्णीय कर्म बांधता हुवा सात कर्म (आयु वर्ज) बांध आठ कर्म बांधे, छ कर्म बांधे (आयु मोहनी वर्ज के) एवं मनुष्य भी ७–८–६ कर्म बांध । शेष नरकादि २३ दंडक सात कर्म बांध आठ कर्म बांधे । इति ।

समुच्चय घणा जीव ज्ञाना वर्णीय कर्म बांधते हुवे ७ ८–६ कर्म बांध जिसमें ७–८ कर्म बांधणे वाला सास्वता और छे का असास्वता जिसका भांगा ३

(१) सात-आठ कर्म बांधने वाला घणा (सास्वता)

(२) सात-आठ कर्म बांधने वाला घणा और छ कर्म बांधने वाला एक

(३) सात-आठ कर्म बांधने वाला घणा . और छ कर्म बांधने वाला भी घणा

घणा नारकी का जीव ज्ञाना वर्णीय कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे जिसमें सात कर्म बांधने वाला सास्वता और आठ कर्म बांधनें वाला असास्वता भांगा ३

(१) सात कर्म बांधने वाला घणा (सास्वता है)

(२) सात कर्म बांधने वाला घणा और आठ कर्म बांधने वाला एक

(३) सात कर्म बांधने वाला घणा और आठ कर्म बांधने वाला भी घणा इसी माफिक १० भुवनपति, ३ विकलेंद्री, तीर्यंच पचेंद्री, व्यंतर देव, जोतीषि, और वैमानीक एव १८ दंडक का ५४ भागा समझना

पृथ्व्यादि पाच स्थावर में ज्ञाना वर्णीय कर्म बाधतां सात कर्म बाधने वाला घणा और आठ कर्म बाधने वाला भी घणा । भांगा नहीं उठता है

घणा मनुष्य ज्ञाना वर्णीय कर्म बाधेतों ७–८–६ कर्म बांधे जिसमें सात कर्म बाधने वाला सास्ता ८–६ कर्म बांधने वाला असास्वता जिसका भागा ६

सात	आठ	छ	सात	आठ	छ
३ (घणा)	०	०	३	१	१
३	१	०	३	१	३
३	३	०	३	३	१
३	०	१	३	३	३
३	०	३	एव ६ भागा हुवा		

समुच्चय जीवों का भांगा ३ अठारे दंडक का भांगा ५४ और मनुष्य का भांगा ६ सर्व मिलके ज्ञाना वर्णीय कर्म का ६६ भांगा हुवा । इति ।

एवं दर्शना वर्णीय, नाम, गोत्र, अन्तराय, ए चार कर्म ज्ञाना वर्णीय सादृश होने से पूर्ववत् प्रत्येक कर्म का ६६ छाछ भांगा गीणने से ३३० भांगा हुवा

समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधता हुवा।७-८-६-१ कर्म बांधे इसी माफिक मनुष्य भी ७-८-६-१ कर्म बांधे शेष २३ दंडक के एक एक जीव ७-८ कर्म बांधे ।

समुच्चय घणा जीव वेदनीय कर्म बांधता ७-८-६-१ बांधे जिसमें ७-८-१ कर्म बांधने वाला सास्वता और ६ कर्म बांधने वाला असास्वता जिसको भांगा ३ ।

(१) ७-८-१ कर्म बांधने वाला घणा (सास्वता)

(२) ७-८-१ का घणा और छ कर्म बांधने वाला एक ।

(३) ७-८-१ का घणा और छै कर्म बांधने वाला भी घणा ।

घणा नारकी का जीव वेदनी कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांधने वाले सास्वते और ८ कर्म बांधने वाले असास्वते जिसका भागा ३।

(१) सात कर्म बांधने वाला घणा।

(२) सात कर्म बांधने वाला घणा और ८ कर्म बांधने वाला एक।

(३) सात कर्म बांधने वाला घणा ८ कर्म बांधने वाला घणा।

एवं १० भुवनपति ३ विकलेंद्री, तीर्यच पचेंद्री, व्यंतर, जोतीषी, वैमानीक, नरकादि, १८ दंडक में तीन भागा गिणता ५४ भागा हुवा।

पृथ्व्यादि पांच स्थावर में सात कर्म बांधने वाला घणा और ८ कर्म बांधने वाला भी घणा वास्ते भागा नहीं उठते हैं।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म बांधता ७-८-६--१ कर्म बांधे जिसमें ७-१--कर्म बांधने वाला घणा जिसका भाग ९

७-१	८	६	७-१	८	६
३-(घणा)	०	०	३	१	१
३	१	०	३	१	३
३	३	०	३	३	१
३	०	१	३	३	३
३	०	३	एवं ९ भांगा		

समुच्चय जीव का भांगा ३ अठार दंडक ना ५४ मनुष्य ना ९ सर्व ६६ भांगा हुवा इति

समुच्चय एक जीव मोहनी कर्म बांधता ७-८ कर्म बांधे एवं २४ दंडक।

समुच्चय घणा जीव मोहनी कर्म बांधतां ७-८ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांध ने वाला घणा और आठ कर्म बांधने वाला भी घणा इसी माफिक ५ स्थावर भी समझ लेना।

घणा नारकी का जीव मोहनी कर्म बांधता ७ ८ कर्म बांधे जिसमें ७ कर्म बांधने वाला सास्वता ८ का असास्वता जिस का भागा ३ ।

(१) सात कर्म बांधने वाला घणा (सास्वता)
(२) ,, ,, ,, आठबांधनेवालाएक
(३) ,, ,, ,, ,, घणा

एवं पांच स्थावर वर्जके १९ दंडक में समझ लेना ५७ भागा हुआ ।

समुच्चय एक जीव आयुष्य कर्म बांधता नियमा ८कर्म बांधे एवं नरकादि २४ दंडक इसी माफिक घणा जीव आश्रयि समुच्चयजीव और २४ दंडकमें भी नियम ८कर्म बांधे इति ।

भागा ३३०-६६-५७ सर्वमिली ४५३ भागा हुआ इति सेव भन्ते सेव भन्ते ।

तमेव सच्चम्

थोकड़ा नम्बर ४

(सुत्र श्री पन्नवणाजी पद २५)

(बांधतो वेदे)

मूल कर्म प्रकृति आठ यावत् पद २४ के माफिक समझना।

समुच्चय एक जीव ज्ञानावर्णीय कर्म बांधतो हुवो नियमा आठ कर्म वेदे कारण ज्ञानावर्णीय कर्म दशमागुण स्थान तक बांधे हैं वहां आठही कर्म मौजूद है सो वेदरहा है एवं नरकादि २४ दंडक समझना।

समुच्चय घणा जीव ज्ञानावर्णीय कर्म बांधते हुवे नियमा आठ कर्म वेदे यावत् नरकादि २४ दंडक मेंभी आठ कर्म वेदे।

एवं वेदनीय कर्म वर्जके शेष दर्शनावर्णीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, अन्तराय कर्म भी ज्ञानावर्णीय माफिक समझना।

समुच्चय एक जीव वेदनीय कर्म बांधे तो ७-८-४ कर्मवेद कारण वेदनीय कर्म तरवागुण स्थान तक बांधते है। एव मनुष्यभी समझना शेष २३ दडक नियमा ८ कर्म वेदे।

समुच्चय घणा जीव वेदनी कर्म बाधत हुवे ७-८ ४ कर्म वेद एव मनुष्य। शेप २३ दडक के जीव नियमा आठ कर्म वेद।

समुच्चय जीव ७-८ ४ कर्म वेदे जिसमे ८-४ कर्म वेदने वाला सास्वता और ७ कुकर्म वदने वाला असास्वता जिसका भागा ३

(१) आठ कर्म और चार कर्म वेदनेवाला घणा

(२) ,, ,, ,, ,, सातकर्म वेदनवाला एक

(३) आठ-चारकर्म वेदनेवाला घणा, और सात कर्म वादने वाला घणा एव मनुष्यमे भी ३ भागा समझना सर्व भांगा ६ हुआ इति सेव भन्ते सेव भन्ते

समाप्तम्।

३	१	०	३	३	१	१	३
३	३	०	१	३	१	३	१
३	३	०	३	३	१	३	३
३	०	१	१	३	३	१	१
३	०	१	३	३	३	१	३
३	०	३	१	३	३	३	१
३	०	३	३	३	३	३	३
३	१	१	१	एवं भांगा २७			

एंव दर्शना वर्णीय और अन्तराय कर्म भी समझना ।

समु० एक जीव वेदनीय कर्म वेदतो ७-८-६-१-० (अबाध) कर्म एवं मनुष्य। शेष २३ दंडक ७-८ कर्म बांधे।

समु० घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१-० जिसमें ७-८-१ का सास्वता और छकर्म तथा अबांधे का असास्वता जिसका भागा ६।

७-८-१	६	अबांध	७-८-१	६	अबांध
३ (घणा)	०	०	३	१	१
३	१	०	३	१	३
३	३	०	३	३	१
३	०	१	३	३	३
३	०	३	एवं भांगा ६		

नारकी का घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता ७ ८ कर्म बांधे जिसमें ७ का सास्वता और ८ कर्म बांधने वाला अ-सास्वता जिसका भांगा ३ ।

(१) सात का घणा (२) सात का घणा आठको एक (३) सातका घणा और आठ कर्म बांधनेवाला भी घणा ।

एवं एकेंद्रीका ५ दंडक और मनुष्य वर्ज के १८ दंडक में समझना भांगा ५४ ।

घणा मनुष्य वेदनीय कर्म वेदता ७-८-६-१-० (अर्थात) जिसमें ७-१ कर्म बांधन वाला सास्वता और ८-६-० का असास्वता जिसका भांगा २७ ।

७-१	८	६	०	३	,,	०	०	३
३ (घणा)	०	०	०	३	,,	१	१	०
३ ,,	१	०	०	३	,,	१	३	०
३ ,,	३	०	०	३	,,	३	१	०
३ ,,	०	१	०	३	,,	३	३	०
३ ,,	०	३	०	३	,,	१	०	१
३ ,,	०	०	१	३	,,	१	०	३
				३	,,	३	०	१

७-१	८	६	०		३	,,	१	१	३
३	,,	३	०	३	३	,,	१	३	१
३	,,	०	१	१	३	,,	१	३	३
३	,,	०	१	३	३	,,	३	१	१
३	,,	०	३	१	३	,,	३	१	३
३	,,	०	३	३	३	,,	३	३	१
३	,,	१	१	१	३	,,	३	३	३
					एवं भांगा २७				

समु० एक जीव मोहनीय कर्म वेदतो ७--८--६ कर्म बांधे एवं मनुष्य शेष २३ दंडक ७--८ कर्म बांधे।

समु० घणा जीव मोहनीय कर्म वेदतां ७--८--६ कर्म बांधे जिसमें ७--८ कर्म बांधने वाला सास्वता ६ कर्म बांधने वाला असास्वता जिसका भागा ३।

(१) ७--८ कर्म बांधने वाला घणा।

(२) ,, ,, ,, छ कर्म बांधने वाला एक

(३) ,, ,, ,, घणा

जैसे वेदनीय कर्म वैसे ही आयुष्य, नाम, गोत्र, समझना।

घणा नारकी मोहनी कर्म वेदता ७-८ कर्म बाध जिसमें ७ कर्म बाधने वाला सास्वता और ८ कर्म बाधने वाला असास्वता जिसका भागा ३ ।

(१) सात का घणा (२) सात का घणा आठा को एक (३) सात का घणा आठ का भी घणा एव मनुष्य तथा एकेंद्री वर्ज १८ दडक का भागा ५४ समझना एकेंद्री में सात कर्म बाधने वाला घणा और आठ कर्म बाधने वाला भी घणा ।

घणा मनुष्य में मोहनी कर्म वेदता ७ ८-६ कर्म बाधे जिसमें ७ कर्म बाधने वाला सास्वता और ८-६ कर्म बाधने वाला असास्वता जिसका भागा ६ ।

७	८	६	७	८	६
३	०	०	३	१	१
३	१	०	३	१	३
३	३	०	३	३	१
३	०	१	३	३	३
३	०	३	एव भागा ६		

सर्व भांगा ज्ञानावर्णीय कर्म का ६--५४--२७ सर्व ९० इसी माफिक ७ कर्म का ६३० और मोहनीय कर्म का ३--५४--६ सर्व ६६ भांगा हुवे। वेदते हुवे बांधे जिसका कुल भांगा ६९६ भांगा हुवा इति।

सेवं भन्ते सेवं भन्ते तमेव सच्चम्।

थोकड़ा नम्बर ६

सूत्र श्रीपन्नवणाजी पद २७

(वेद तो वेदे)

मूल कर्म प्रकृति आठ यावत् पद २४ से समझना।

समु० एक जीव ज्ञानावर्णीय कर्म वेदतो ७--८ कर्म वेदे एवं मनुष्य शेष २३ दंडक में नियमा ८ कर्म वेदे।

समु० घणा जीव ज्ञानावर्णीय कर्म वेदता ७-८ कर्म वेदे जिसमें ८ कर्म वेदने वाला सास्वता और ७ कर्म वेदने वाला असास्वता जिसका भांगा ३.

(१) आठ कर्म वेदने वाला घणा.
(२) ,, ,, सात का एक
(३) ,, ,, ,, घणा.

मनुष्य वर्ज के शेप २३ दंडके नियमा ८ कर्म वेदे और मनुष्य में समुच्चय जीवकी माफिक भागा ३, समजना

इसी माफिक दर्शनावर्णीय और अन्तराय कर्म भी समझना.

समु० एक जीव वेदनीय कर्म वेदतो ७-८-४ कर्म वेदे एवं मनुष्य शेप २३ दंडक का जीव नियमा ८ कर्म वेदे

समु० घणा जीव वेदनीय कर्म वेदता ७-८-४ कर्म वेदे जिसमें ८-४ कर्म वेदने वाला सास्वता और ७ कर्म वदने वाला असास्वता भागा ३.

(१) ८-४ का घणा (२) ८-४ का घणा ७ को एक (३) ८-४ का घणा ७ का भी घणा एवं मनुष्य में भी ३ भागा समझना शेप २३ दंडक में वेदनीय कर्म वदता नियमा ८ कर्म वेदे.

वेदनीय कर्म की माफिक आयुष्य; नाम, गोत्र कर्म भी समझना

समु० एक मोहनीय कर्म वेदतों निदपा ८ कर्म वेदे एवं २४ दंडक समझना इसी माफिक घणा जीव भी ८ ४२ कर्म वेदे.

सर्व भांगा ज्ञाना वर्णीयादि सात कर्म पे समुच्च-जीवका वीन तीन और मनुष्य का तीन तीन एवं भांगा हुवा इति.

सेवं भन्ते सेवं भन्ततमेव सच्चम्

९४५३ वाधतों वांधे का भांगा	६९६ वेदता वांधे का भांगा
६ वांधतो वेदे का भांगा	४२ वेदता वेदे का भांगा

११९७

थोकड़ा नंबर ७

श्री भगवतीजी सूत्र शा० ६ उ० ३

५० बोल की वांधी-द्वार १५

वेद (पुरष १ स्त्री २ नपुंषक ३ अवेदी ४) संयति (संयति १ असंयति २ संयता संयति ३ नोसंयति नोअ-

संयति नोसंयता संयति ४) दृष्टि, (सम्यक्त्व दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ मिश्र दृष्टि ३) सन्नी, (सन्नी १ असन्नी २ नो सन्नीनोअसन्नी ३) भव्य, (भव्य १ अभव्य २ नो भव्या भव्य ३) दर्शन, (चक्षु दर्शन १ अचक्षु दर्शन २ अवधि दर्शन ३ केवल दर्शन ४) पर्याप्ता (पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ नो पर्याप्तापर्याप्ता ३) भाषक, (भाषक १ अभाषक २) परत्त, (परत १ अपरत २ नो परतापरत ३) ज्ञान, (मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान २ अवधि ज्ञान ३ मनः पर्यव ज्ञान ४ केवल ज्ञान ५ ५ मतिअज्ञान ६ श्रुतिअज्ञान ७ विभंगज्ञान ८) योग, (मनयोग १ वचनयोग २ कायजोग ३ अयोगी ४) उपयोग (साकार १ अनाकार २) आहार (आहारी अनाहारी २) सूक्ष्म, (सूक्ष्म १ बादर २ नो सूक्ष्म नो बादर ३) चरम (चरम १ अचरम २) इत्यादि ॥

(१४) गु.ठा० १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ [illegible] ७

अभव्य ८ अपर्याप्ता ९ अपरत्त १० मति अज्ञान ११ श्रुति अज्ञान १२ विभंगज्ञान १३ और सूक्ष्म १४ इन चवदै बोलों में ज्ञानावरणीयादि सातों कर्मों को नियमा बांधे, आयुष्य कर्म बांधे ने की भजना (स्यात् बांधे स्यात् न बांधे)

(१३) संज्ञी १ चक्षु, दर्शन २ अचक्षु दर्शन ३ अवधि दर्शन ४ भाषक ५ मतिज्ञान ६ श्रुतिज्ञान ७ अवधिज्ञान ८ मनःपर्यव ज्ञान ९ मनयोग १० वचनयोग ११ काययोग १२ और आहारी १३ इन तेहर बोलों में वेदनी कर्म बांधने की नियमा शेष साता कर्म बांधने की भजना.

(११) संयति १ सम्यक्त्व दृष्टि २ भव्य ३ अभाषक ४ पर्याप्ता ५ परत्त ६ साकारोपयोग ७ अनाकारोपयोग ८ बादर ९ चरम १० और अचरम ११ इन ग्यारे बोलों में आठों कर्म बांधने की भजना.

(६) नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति १ नो भव्याभव्य २ नो पर्याप्ता नो अपर्याप्ता ३ नो परत्ता

परत ४ अयोगी ५ और नो सुक्ष्म नो बादर ६ एवम् छै बोलों में किसी कर्म का बंध नहीं है (अबंधक)

(३) केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ नो सन्नी नो नो असंनी ३ इन बोलों में वेदनी कर्म बांधने की भजना, बाकी सातों कर्मों का अबंध

(२) अवेदी १ अणाहारी २ इन दोनों में सात कर्म बांधने की भजना आयुष्य कर्म का अबंधक और (१) मिश्रदृष्टि में साता कर्म बांध आयुष्य न बांधे

इति ५० बोलकी बांधी समाप्तम् ॥

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नंबर ८

श्री भगवतीजी सूत्र श० ८ उ० ८

कर्म का बंध

कर्मों का बंध जाणने से ही उनको तोड़ने का उपाय मालूम हो सकता है इसवास्ते शिष्य प्रश्न कर ता है।

हे भगवन्! कर्म कितने प्रकार से बंधता है!

दो प्रकार से–यथा १ इर्यावहि (केवल योगों ही से ११-१२-१३ गुण स्थानक में बंधता है) २ संप्राय (कषाय और योगों से पहिले गुणस्थानक से दसवें गुणस्थानक तक बंधता है।

इर्यावाहिकर्म क्या नारकी, के जीव बांधें त्रीर्यंच, त्रीर्यंचणी मनुष्य, मनुष्यणी देवता, देवी बांधते है!

नारकी, त्रीर्यंच, त्रीर्यंचणी देवता, देवी न बांधे शेष मनुष्य, और मनुष्यणी, बांधे· भूतकाल में बहुत से मनुष्य और मनुष्यणीयों ने इर्यावहि कर्म बांधा था और वर्तमान काल का भांगा ८ यथा १ मनुष्य एक २ मनुष्यणी एक ३मनुष्य बहुत ४ मनुष्यणी बहुत ५ मनुष्य एक और मनुष्यणी एक ६ मनुष्य एक और मनुष्यणी बहुत ७ मनुष्य बहुत और मनुष्यणी एक ८ मनुष्य बहुत और मनुष्यणीयां बहुत।

इर्या वहि कर्म क्या एक स्त्री बांधे, या एक पुरुष बांधे या एक नपुंसक बांधे! एसेही क्या बहुत से स्त्री, पुरुष, नपुंसक बांधे?। उक्त ६ ही बोल नहीं बांधे।

यथा इर्यावहि कर्म नोस्त्री, नोपुरुष, नोनपुंसक (पहिले-वेदका उदयथा तब स्त्रीपुरुषादि कहे वेदक क्षयहोन से नोस्त्री नोपुरुषादि कहे) बांधे ?

हां, बाधे भूतकाल में बाधा वर्तमान में बांधे और भविष्यमें बाधेंगे. जिसमें वर्तमान बधके भागा २६ यथा असयोगभांगा ६ एक नोस्त्री बाधे बहुतसी नोस्त्रीया बांधे २ एक नो पुरुष बाधे ३ बहुत से नापुरुष बाधे ४ एक नो नपुंसक बाधे ५ बहुत स नो नपुसक बाधे ।

द्विसयोगी भांगा १२

नोस्त्री नोपुरुष १		नोस्त्री नो नपुसक २		नोपुरुष नो नपुसक ३	
१	१	१	१	१	१
१	३	१	३	१	३
३	१	३	१	३	१
३	३	३	३	३	३

चिन्ह (१) एक वचन (३) बहुवचन समझना

त्रिक संयोगी भांगा ८।

नोस्त्री.	नो पुरुष	नोनपुंसक	नोस्त्री.	नोपुरुष	नोनपुंसक
१	१	१	३	१	१
१	१	३	३	१	३
१	३	१	३	३	१
१	३	३	३	३	३

इति २६ भांग घणा भव आश्री इर्यावही कर्म जो ८ भांगे नीचें लिखे है उनका बंध कहां २ होता है ? कोण सा जीव इण भांगा का अधिकारी है।

१ बांधाथा, बांधता है, बांधेगा,
२ बांधाथा, बांधताहै, न बांधेगा,
३ बांधाथा, नहीं बांधताहै, बांधेगा,
४ बांधाथा, नहीं बांधताहै, नबांधेगा,
५ नबांधाथा, बांधताहै, बांधेगा,
६ नबांधाथा, बांधताहै, नबांधेगा,
७ नबांधाथा, नबांधताहै, बांधेगा,
८ नबांधाथा, नबांधताहै, नबांधेगा,

पहिला भागा उपशम श्रेणी वाले जीवों में मिले. जैसे उपशम श्रणी १० भवमें १ जीव जघन्य और उत्कृष्ट २ वार करता है कोई जीव १ वार उपशम श्रेणीकरके पीछा गिरा तो पहिले उपशमश्रेणी करोंथी इसलिये इर्यावही कर्म बाधा और वर्तमानकाल में दुसारा उपशमश्रेणी वरतता है इसलिये इर्यावही कर्म बाधरहा है और उपशम श्रेणीवाला अवश्य पीछा गिरेगा. परन्तु फिरभी नियमा मोक्ष जानेवाला है इसवास्ते भविष्य में इर्यावही कर्म बाधेगा.

(दूसरा) भागा पहिले उपशम श्रेणी की तब इर्यावही कर्म बाधा था. वर्तमानमें क्षपक श्रणी पर वरतता है इसलिये बाधता है आगे मोक्ष चला जायगा इस वास्ते न बाधेगा.

(तीसरा) भागा पहिलेउपशम श्रेणी करके बाधाथा वर्तमानमें नीचे के गुणस्थानक पर वर्तता है इसलिये नहीं बाधता और मोक्षगामी है इसलिये भविष्य में बाधेगा.

(चौथा) भांगा चौदमा गुणस्थानक या सिद्धों के जीवों में है ।

(पांचमां) भांगा भूतकालमें उपशम श्रेणी नहीं की इसलिये नहीं बांधा, वर्तमान में उपशम श्रेणी पर है इस लिये बांधता है भविष्यमें मोक्ष गामी है इसलिये बांधेगा।

(छठा) भांगा प्रथम ही क्षपक श्रेणी करणे वाला भूतकालमें न बांधा था, वर्तमानमें बांधे है भविष्यमें मोक्ष जावेगा वास्ते न बांधे।

(सातमा) भांगा भूतकाल और वर्तमानमें उपशम श्रेणी या क्षपक श्रेणी नहींकी इसलिये नहीं बांधा और नहीं बांधताहै परन्तु भव्यहै इसलिये नियमा मोक्ष जायग तब बांधेगा।

(आठमा) भांगों अभव्य प्रथमगुण स्थानकवर्ती में मिलताहै और एक भव आश्री ७ भांगोंका जीव मिले छठा भांगों शून्य है समय मात्र बंधाभावा पेक्षा है।

इर्यावहि कर्म क्या इन चार भांगों से बांधे ? १ सादिसांत २ सादि अनंत ३ अनादि सांत ४ अनादि अनंत ?

सादि सांत भांगे से बांधे. क्योंकि इर्यावहि कर्म ११-१२-१३ वें गुण स्थानक के अंत समय तक बंधता

है इसलिये आदि है और चौदवें गुणस्थानक के प्रथम समय बंध विच्छेद होने से अनादि है बाकी तीन भांगे शून्य हैं.

इयांवहि कर्म क्या देश (जीवके एक देश) से देश (इर्यावहि के एक देश) बांधे १ या देश से सर्व २ या सर्व से देश ३ या सर्व से सर्व बांधे ?

हां सर्व से सर्वका बंध होसक्ता है बाकी तीनों भांगे शून्य है इति.

साम्पाय कर्म क्या नारकी, तिर्यच, तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी, देवता, देवी, बांधे ?

हां बांधे क्योंकि सम्पाय कर्म का बंध पहिले गुण स्थानक से दशवें गुणस्थानक तक है

सम्पाय कर्म क्या १ स्त्री १ पुरुष १ नपुंसक या बहुत से स्त्री, पुरुष, नपुंसक बांधे

हां सब बांधे भूतकाल में बहुत जीवों ने बांधा था वर्तमान् में बांधते हैं और भविष्य में कोई बांधेगा कोई न बांधेगा कारण मोक्षमें जानेवाले हैं

सम्पाय कर्म क्या अवेदी (जिनका वेद क्षय हो-
गया हो) बांधे ?

हां, भूतकालमें बहुतसे जीवोंने बांधाथा. और वर्त-
मान में भांगे २६ से इर्यावही कर्मवत् बांधे. क्योंकि अ-
वेदी नवमें गुणस्थानक के २ समय बाकी रहने पर
(वेदोंका क्षय होने से) होजाते हैं और सम्पाय कर्मका
बंध दशवें गुणस्थानक तक है

सम्पाय कर्म क्या इन चार भांगों से बांधे १ सादि
सांत १ सादि अनंत २ अनादि सांत ३ अनादि
अनंत ४ ?

तीन भांगों से बांधे, और १ भांगा शून्य यथा. १
सादिसांत भांगों से बांधे सम्पाय कर्मबांधनेकी जीवों के
आदि नहीं है. परन्तु यहां अपेक्षायुक्त वचन है. जैसे कि
जीव उपशम श्रेणी करके ग्यारमें गुणस्थानक वर्तता हुवा
इर्यावही कर्म बांधे परंतु इग्यारमें गुणस्थानक से नियमा
गिरकर सम्पाय कर्म बांधे इस अपेक्षा से सम्पाय
कर्मकी आदिहै और क्षपक श्रेणीकर के बारमें गुणस्थानक

अवश्य जावेगा, वहाँ सम्पराय कर्म का बंध नहीं है इस, लिये अतभी है २ सादि अनत भागा शून्य है क्योंकि ऐसा कोई जीव नहीं है कि जिसके सम्पराय कर्मकी आदि हो, यदि उपशम श्रेणी की -अपेक्षा से कहोगे तो वह नियमा मोक्षभी जायगा तो अनत पणाकी बाधा आवेगी। वास्ते यह भागा शास्त्र कार शून्यकहा है

३ अनादि सांत भव्य जीवोंकी अपेक्षा से- क्योंकि जीवके सम्पराय कर्मकी आदि नहीं है परतु मोक्ष जायगा इसवास्ते अत है।

४ अनादि अनत अभव्य जीवकी अपेक्षा से जिसके साम्पराय कर्मको आदि नहीं है और न कभी अतहोगा

सम्पराय कर्म क्या इन चार भागों से बांधे ? देश (जीवका) से देश (सम्पराय कर्मका) २ देशसे सर्व ३ सर्व से देश ४ सर्व से सर्व १

सर्व से सर्व इस भागे स सम्पराय कर्मबाघ बाकी तीनों भागे शून्य सम्परायकर्म जक्रमे रखाने वाला है और इर्या वही मोक्ष नगर में पहुचाने वाला है दानु बध छूटने से जीव मोक्ष में जाता है इति-समाप्तम्

सेव भते सेव भते तमेव सच्चम् ॥

थोकड़ा नं० ९

श्री भगवतीजी सूत्र श० २६ उ० ११

(४७ बोल की बांधी)

इस शतक में कर्मों का बांधि बंध सम्बन्ध है. इस वास्ते गणधरों ने सूत्र देवता को पहिले नमस्कार करके फिर शतक को प्रारंभ किया है.

गाथा—जीवय १ लेस्स ८ पक्खिय २ दिट्ठी ३ नाण ६ अनाण ४ सन्नाओ ५ वेय ५ कसाये ६ जोगे ५ उवओगे २ एकारसविट्ठाणे ॥ १ ॥

अर्थ---समुच्चय जीव १ ॥ लेश्या ६ अलेशी ७ सलेशी ८॥ पक्ष० कृष्णपक्षी १ शुक्लपक्षी २॥ दृष्टि० सम्यक्त्व-दृष्टि १ मिश्रदृष्टि २ मिथ्यादृष्टि ३॥ ज्ञान ५ सनाणी ६॥ अज्ञान ३ अनाणी ४ ॥ संज्ञा ४ नोसंज्ञा ५॥ वेद ३ सवेदी ४ अवेदी ५॥ कषाय० ४ सकषाय ५ अकषाय ६॥ योग० ३ सयोगी ४ अयोगी ५॥ उपयोग० साकार ३ अनाकार २॥ एवम ४७

चौवीसों दंडकों में से कौन २ से दंडक में कितने २ भेद पावे नीचे के यन्त्र द्वारा समझलेना।

सं	नाम दंडक	शो १	खे ८	प २	द ३	ला [illegible]	दृ ४	स ४	दे ५	क ६	पो २	उप २	कु ४०
१	नारकी	१	४	२	३	४	४	४	२	५	४	[illegible]	३२
१०	असुर आदि १०	१	४	[illegible]	३	४	४	४	३	५	४	२	३०
	पंच स्थावर ५												
१३	ज्योतिषी १	१	२	[illegible]	३	४	४	४	३	५	६	[illegible]	३४
	वै (देवलोक २	१	[illegible]	[illegible]	३	४	४	४		५	४	-	१८
	मा देवलोक ३से१२	१	२	[illegible]	३	४	४	४	[illegible]	५	४	२	३०
२४	नि ग्रैवक ९	१	[illegible]	२	[illegible]	४	४	४	२	५	४	[illegible]	[illegible]
	क अनुत्तर	१	२	[illegible]	१	४	०	४	[illegible]	५	६	[illegible]	२[illegible]
०	पृ पाणी वन० ३	१	४	[illegible]	१	०	३	४	२	५	[illegible]	[illegible]	२०
१४	तेऊ वायु २	१	४	[illegible]	१	०	३	४	[illegible]	५	-	२	[illegible]
३	विकलेन्द्री	१	४	[illegible]	[illegible]	३	३	[illegible]	[illegible]	५	-		३१
१	ति० पंचेन्द्री	१	[illegible]	-	३	४	४	४	४	५	[illegible]	२	४०
१४	मनुष्य	१	८		३	६	४	५	६	१	५	[illegible]	[illegible]

तीजे, चौथे और पांचवें, देवलोकमें एक पद्मलेश्या और छठे, से बारमे देवलोक तक एक शुक्ल लेश्या है इस लिये प्रत्येक देवलोकमें १ लेश्या और दूसरामें लेश्या पर दो भेद पावें।

बंधका भांगा ४ है. इसपर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

(१) कर्म बांधा, बांधे, बांधसी,

(२) कर्म बांधा, बांधे, न बांधसी,

(३) कर्म बांधा, न बांधे, बांधसी,

(४) कर्म बांधा, न बांधे, न बांधसी,

आठ कर्म है. जिसमें ४ घाती कर्मों को एकांत पाप कर्म माना है (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, और अंतराय,) और इनमें मोहनीय कर्म सब से प्रबल मानागया है. शेष वेदनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र, ये चार अघाती कर्म हैं (पाप पुण्य मिश्रित) इसलिये शास्त्रकारों ने प्रथम लहुच्चे पापकर्म की पृच्छा अलग की है उपरोक्त ४७ बोलोंमेंसे कौन २ से बोलके जीव इन चार भांगों में से कौन २ से भांग से पाप कर्म को बांधे. इस में मोहनीय कर्मकी प्रबलताहै इसलिये उसके बंध विच्छेद होने से शेष कर्मों के विद्यमान होते हुए भी उनके बंध

(३) बांधा, न बांधे, बांधसी, उपशम श्रेणी. दशमें, इग्यार में गु० तक.

(४) बांधा, न बांधे, न बांधसी, क्षपक श्रेणी दशमें गुण० तद्भव मोक्षगामी.

मिश्र दृष्टि में दो भांगा से मीलता है.

(१) बांधा, बांधे बांधसी. यह सामान्यता से कहा है. बहुत भवपेक्षा.

(२) बांधा बांधे, न बांधसी, यह विशेष व्याख्या है. क्योंकि भव्य जीव है व तद्भव मोक्ष जायगा तब (न बांधसी).

अकषायी में दो भांगा यथा—

(३) बांधा, न बांधे, बांधसी, उपशम श्रेणी दसमें, इग्यारमें गुण० वर्तता हुआ भूत कालमें बांधा वर्तमान् (न बांधे) परन्तु नियमा पीछा गिरेगा. तब (बांधसी)

(४) बांधा, न बांधे, न बांधसी, क्षपक श्रेणी वाले अकषायी.

अलेशी, केवली और अजोगी, में भांगा १ बांधा, न बांधे, न बांधसी।

लेश्या पाँच, कृष्णपक्षी, अज्ञानी चार, वेद चार, संज्ञा चार, कषाय तीन, और मिथ्या दृष्टि इन बाईस बोलों के जीवों में भागा २ मिलते हैं यथा।

(१) बांधा, बांधे, बांधसी, अभव्य की अपेक्षा से.

(२) बांधा, बांध, न बांधसी, भव्य की अपेक्षा से.

यह समुच्चय जीव की अपेक्षा से कहा ऐसे ही मनुष्य दंडक में समझ लेना शेष तेवीस दंडक के जीव में दो भागा मिलते हैं यथा.

(१) बांधा, बांधे, बांधसी अभव्य की अपेक्षा विशेष व्याख्या न करके सामान्यता से.

(२) बांधा, बांधे, न बांधसी, यह विशेष व्याख्या है क्योंकि भव्य जीव है भविष्य में निश्चय मोक्ष जायगा तब (न बांधसी)

यह समुच्चय पापकर्म की व्याख्या की है अब आठों कर्म की भिन्न २ व्याख्या करते हैं जिसमें मोहनीय कर्म समुच्चय पाप कर्मवत् समझ लेना.

ज्ञानावरणीय कर्म को पूर्व कहे हुए बीस बोलों में से सकषायी और लोभ कषायी, ये दो बोलों को छोड़कर शेष अठारा बोलों के जीवपूर्वोक्त चारो भांगों से वांधे (पूर्व में जोकुछ कह आये हैं. और आगे जो कुछ कहेंगे, ये सब बातें गुणस्थानक से संबध रखती है. इसलिये पाठकों को हरेक बोल पर गुणस्थानक का उपयोग रखना अति आवश्यक है, विना गुणस्थानक के उपयोग ये वातें समझ में आना मुश्किल है)

अलेशी, केवली, और अयोगी, में भांगा १ चौथा. बांधा, न बाधे, न बांधसी,

मिश्रदृष्टि में भांगा २ पहिला और दूसरा पूर्ववत्

अकषायी में भांगा २ तीसरा और चौथा पूर्ववत्

शेष चौवीस बालों (बावीस पाप कर्म की व्याख्या में कहा वो और सकषायी, लोभ कषायी) में भागा २ पहिला और दूसरा पूर्ववत्

यह समुच्चय जीव की अपेक्षा से कहा. इसी तरह मनुष्य दंडक में समझ लेना. शेष तेवीस दंडक के जीव

में दो भागों (पहिला और दूसरा) जैसे ज्ञाना वरणीय कर्म बांधे. एवम् दर्शना वरणीय, नाम कर्म, गोत्रकर्म और अतराय कर्म का भी बंध आश्रयी भागा लगालेना—

समुच्चय जीवों की अपेक्षा से वेदनीय कर्म को, समुच्चय जीव, सलेशी, शुक्ललेशी, शुक्लपक्षी, सम्यक्दृष्टि, सज्ञानी, केवल ज्ञानी, नासज्ञी, अवेदी, अकषायी, साकार उपयोगी, और अनाकार उपयोगी, इन (१२) बारे बालों के जीव में तीन भागा मिलता है पहिला, दूसरा और चौथा भागा और बांधा, न बाधे, बांधसी, इस तीसरे भागों में पूर्वोक्त बारे बोलों के जीव नहीं मिलते क्योंकि यह भागा वर्तमान काल में वेदनीय कर्म न बांधे यह नहीं होसक्ता कारण वेदनीय कर्म का बंध तेरमा गुणस्थानक के अतमें विच्छेद होता है.

अलेशी, अजोगी, में भागा १ चौथो. बांधा, न बांधे न बांधसी, शेष बतीस बोलों में भागा २ पहिला और दूसरा

एवम् मनुष्य दंडक में भी भागा ३ समुच्चय वत् समझलेना शेष तेवीस दंडक में भांगा २ पहिला और दूसरा.

समुच्चय जीवों की अपेक्षा से आयुष्य कर्म में. अलेशी, केवली, और अयोगी, ये तीन बोलों के जीवों में केवल चौथा भांगा पावे

कृष्ण पक्षी में भांगा २ पहिला और तीसरा

मिश्रदृष्टी, अवेदी, और अकषायी में २ भांगा. तिसरा और चौथा मनः पर्यव ज्ञानी, नोसंज्ञा. में ३ भागा. पहिले तीसरा और चौथा. शेष अठतीस बोलों के जीवों में चारों भांगा से आयुष्य कर्म बांधे अब चोवीस दंडकों की अपेक्षासे आयुष्य कर्म के बंध के भांगे कहते हैं नारकी के पूर्वोक्त ३५ बोलों मेंसे कृष्ण पक्षी और कृष्ण लेशी में भांगा दो पावे पहिला और तीसरा.

मिश्रदृष्टि में भांगा दो पावे तीसरा और चौथा.

शेष बत्तीस बोलों के जीव चारों भांगों से आयुष्य कर्म बांधे.

देवताओं में भुवनपति से यावत् बारवें देवलोक तक के देवताओं में पूर्वोक्त कहे हुए बोलों में से कृष्णपक्षी, और कृष्ण लेशी में दो भांगा पहिला और दूसरा मिश्र

दृष्टि में दो भागा तीसरा और चौथा, शेष बोलों के जीवों में भागा चारों पावे.

नव ग्रैवेयक के देवताओं में पूर्वोक्त ३२ बोलों में से कृष्ण पक्षी में भागा दो पावे. पहिला और तीसरा. शेष ३१ बोलों में चारों भांगा पावे.

चार अनुत्तर विमानों के देवताओं में पूर्वोक्त २६ बोलों में भागा चारों पावे

सर्वार्थ सिद्ध विमानके देवताओंमें पूर्वोक्त २६ बोलों में भागा ३ पावे. दूसरा, तीसरा, और चौथा,

पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय के जीवों में पूर्वोक्त २७ बोलों में से तेजोलेशी, में भांगा एक पावे तीसरा शेष २६ बोलों के जीव चारों भागों में आयुष्य कर्म बांधे

तेजसकाय और वायुकाय के जीवों के पूर्वोक्त २६ बोलों में भागा २ पावे पहिला और तीसरा

तीनों विकलेन्द्री जीवों के पूर्वोक्त ३१ बोलों में से सम्यग्ज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और सम्यक्दृष्टि इन चार

बोलों के जीवों में भांगा तीसरा पावे शेष २७ बोलों में भांगा २ पहिला और तीसरा

त्रियंच पंचेन्द्री जीवों के पूर्वोक्त ३५ बोलों में से कृष्णपक्षी में भांगा २ पहिला और तीसरा. मिश्रदृष्टि में दो भांगा तीसरा और चौथा. और सज्ञानी, मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी और सम्यक्दृष्टि में भांगा ३ पावे पहिला, तीसरा. और चौथा. शेष २८ बोलोंमें भांगा चारों पावे,

मनुष्य दंडक पुर्वोक्त ४७ बोलों में से कृष्णपक्षी में भांगा दो पावे पहिला और तीसरा. मिश्रदृष्टि, अवेदी. और अकषाइ में भांगा दो पावे तीसरा और चौथा. अलेशी. केवली, और अजोगी में एक भांगा चौथा. नो संज्ञा, चार ज्ञान, सज्ञानी और सम्यक्दृष्टि में तीन भांगा पहिला तीसरा और चौथा. शेष तेतीस बोलों में भांगा चारो पावे.

इस छब्बीसमें शतक के प्रथम उद्देशेका जितना विस्तार किया जाय उतना होसक्ता है परन्तु ग्रन्थ बढ-

जाने के कारण से यहां संक्षेप से वर्णन किया है इस को कन्ठस्थ कर विस्तार गुरु गम्य से धारो ?

इति प्रथम उद्देशा समाप्तम् ॥

श्री भगवती सूत्र शतक २६ उ० २

अणंतर उववन्नगा

अनन्तरोत्पन्न जो प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उनकी अपेक्षा से यह उद्देशा कहेंगे इसी शतक के पहिले उद्देशे में जो ४७ बोल कह आये हैं उनमें से नीचे लिखे १० बोल प्रथम समय उत्पन्न हुआ है उसमें नहीं मिलते क्योंकि उत्पन्न होने के प्रथम समय में इन १० बोलों की प्राप्ति नहीं होती।

(१) अलेशी (२) मिश्रदृष्टि (३) मन पर्यव ज्ञानी (४) केवल ज्ञानी (५) नो संज्ञा (६) अवेदी (७) अकषायी (८) अयोगी (९) मनयोगी (१०) वचनयोगी शेष ३७ बोल समुच्चय जीवों में मिले

नारकादि दण्डकों में नारकी से लेकर बारमें देवलोक तक पूर्वोक्त कहे हुए बोलों में से मिश्र दृष्टि, मन योगी,

और वचन योगी. ये तीन बोल कम करके शेष बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले.

नव ग्रैवेकमें तथा पांच अनुत्तर विमानों में पूर्वोक्त कहे हुए ३२ और २६ बोलों में से मनयोगी और वचन योगी कम करके शेष बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुआ जीव मिले।

त्रियंच पंचेन्द्री में पूर्वोक्त कहे हुये ४० बोलोंमेंसे मिश्र दृष्टी, मनयोगी, और वचनयोगी, ये तीन बोल कम कर के शेष ३७ बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुवा जीव मिले.

मनुष्य दंडक में समुच्चय वत् ३७ बोलों में प्रथम समय का उत्पन्न हुवा जीव मिले !

चौवीस दंडकों में प्रथम समय उत्पन्न हुए जीवों के जो जो बोल कह आए हैं उन बोलों के जीव समुच्चय पापकर्म और ज्ञानावरणीय आदि सात कर्मों (आयुष्य छोड कर) को पूर्वोक्त " बांधा, बांधे, बांधसी,. इत्यादि क चार भांगामें से केवल दो भांगों से बांधे (बांधा बांधे बांधसी । बांधा, बांधे, न बांधसी,)

आयुष्य कर्मको मनुष्य छोडकर शेष तेवीस दंडकों में पूर्वोक्त कह हुवे बोलों में "बांधा, न बांध, बांधसी" । का १ भांगा पावे क्योंकि प्रथम समय उत्पन्न हुवा जीव आयुष्य कर्म बांधे नहीं, भूत कालमें बांधा था और भविष्यमें बांधेगा.

मनुष्य दंडक में पूर्वोक्त ३७ बोलों में से कृष्ण पक्षी में भांगा १ तीसरा शेष छत्तीस बोलों में भागा २ पावे. तीसरा और चौथा

इति द्वितीयो देशकम् समाप्तम्
श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ३

परम्परउववन्नगा

उत्पत्ति के दूसरे समय से यावत् आयुष्य के शेष काल पर परम्पर उववन्नगा कहते हैं इसी शतक के प्रथम उद्देसे में ४७ बोलों में से जितने २ बोल प्रत्येक दंडक के कह आए हैं उसी माफक परम पर उववन्नगा जीवों के समुच्चय जीवादि दंडकों में भी कहना तथा बांधी का भांगा चारो सर्व अधिकार प्रथम उद्देसे के

माफक करना. चांथी के भांगों के साथ " परम परम्बक्मगा " का सूत्र नरकादि सर्व दंडक के साथ जोडलेना.

इति तृतीयो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २५ उ० ४

अणंतर ओगाडा

जीव जिस गति में उत्पन्न हुवा है उसगति के आकाश प्रदेश अवगाह्यां (आलंबन किये) को एक ही समय हुवा है उसको अणंतर ओगाडा कहते हैं. इसके बोल और चांथी के भांगों का अधिकार अणंतर उववन्नगा द्वितीय उद्देसे के माफक करना. और अणंतर उववन्नगा की जगह पर अणंतर ओगाडा का सूत्र नरकादि सब जगह विशेष करना.

इति चतुर्थो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ५

परम्पर ओगाडा

" जीव जिस गति में उत्पन्न हुवा है उस गति के आकाश प्रदेश अवगाह्यां को २ समय से यावत् भवांतर काल

हुआ हो उसको परम पर ओगाढा कहते है इसका सर्वाधिकार इसी शतक के प्रथम उद्देस वत् कहना परन्तु " परम्पर ओगाढा " का सूत्र सब जगह विशेष कहना

इति पचवा देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ६

अणन्तर अहारगा

जिस गति में जीव उत्पन्न हुआ है उस गति में जो प्रथम समय आहार लिया उसको अणन्तर आहारगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार अणन्तर उववन्नगा के दूसरे उद्देसे माफक समझना परन्तु अणन्तर उववन्नगा की जगह पर " अणन्तर आहारगा का सूत्र कहना

इति षष्ठमा दशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २० उ० ७

परम्पर आहारगा

जिस गति में जीव उत्पन्न हुआ है उस गति का आहार द्वितीय समय से अन्तर सब ग्रहण करे उसको परम्पर आहारगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार प्रथम

उद्देसे वत् समझना परन्तु " परम्पर आहारगा का सूत्र सब जगह विशेष कहना.

इति सप्तमो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ८

अणंतर पझत्तगा

जिस गति में जीव उत्पन्न हुआ है उस गति की पर्याप्ति बांधने के प्रथम समय को अणंत्तर पझत्तगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार इसी शतक के दूसरे उद्देसे वत्. परन्तु अणंतर उववन्नगा की जगह पर " अणंतर पझत्तगा " का सूत्र कहना.

इति अष्टमो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ९

परम्पर पझत्तगा

पर्याप्ति के दूसरे समय से यावत् आयुष्य पर्यंत को परंपर पझत्तगा कहते हैं. इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशे वत् समझना. परन्तु परंपर पझत्तगा का सूत्र विशेष कहना।

इति नवमो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० १०

चरमोदेशो

जिस जीव का जिस गति में चरम समय शेष रहा हो उसको चरमोदेशो कहते हैं इसका सर्वाधिकार प्रथम उद्देशवत् परन्तु " चरमोदेशो " का सूत्र विशेष कहना.

इति दशमो देशकम्

श्री भगवती सूत्र श० २६ उ० ११

अचरमोदेशो

अचरमोदेशो प्रथम उद्देशे के माफक है परन्तु ४७ बोलों में अलेशी, केवली, अयोगी ये तीन बोल कम करणा भांगा ४ में चौथो भागो और देवता में सर्वार्थसिद्ध को बोल कम करणा शेष प्रथम उद्देशे के माफक कहना

इति श्री भगवती सूत्र श० २६ समाप्तम्

सेव भंते सेव भंते तमेव सच्चम्



थोकड़ा नं० १०

श्री भगवती सूत्र श० २७

पहिले शतक २६ उदेशा १ में जो ४७ बोल कह आये हैं. उसपर जो " बांधा, बांधे, बांधसी " इत्यादिक ४ भांगों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है उसी माफक यहां भी " कर्म किरिया. करे, करसी " इत्यादिक नीचे लिखे ४ भांगों का अधिकार पूर्ववत् ११ उदेशों बंधी सदृश ही समझ लेना.

(१) करिया, करे, करसी, (२) करिया, करे, न करसी (३) करिया, न करे, करसी (४) करिया, न करे, न करसी.

(प्र) जब अधिकार सदृश है तो अलग २ शतक रहने का क्या कारण है?

(उ) कर्म करिया करे करसी. यह क्रिया काल अपेक्षा सामान्य व्याख्या है और कर्म बांधा बांधे बांधसी. यह बंध काल अपेक्षा विशेष व्याख्या है.

इति शतक २८ उद्देसा ११ समाप्त

थोकड़ा नं० ११

श्रीभगवती सूत्र श० २८

पूर्वोक्त ४७ बोलों के जीव पापादि कर्म कहां के बांधे हुए कहां भोगवे ? इसके भांगे ८ हैं यथा (१) तिर्यच में बांधा तिर्यच में ही भोगवे (२) तिर्यच में बांधा नरक में भोगवे (३) तिर्यच में बांधा मनुष्य में भोगवे (४) तिर्यच में बांधा देवता में भोगवे (५) तिर्यच में बांधा नारकी और मनुष्य में भोगवे (६) तिर्यच में बांधा नारकी और देवता में भोगवे (७) तिर्यच में बांधा मनुष्य और देवता में भोगवे. (८) तिर्यच में बांधा नारकी मनुष्य देवता तीनों में भोगवे एवम् भांगा ८। पहिले शतक २६ उद्देशा १ में जो ४७ बोलों का प्रत्येक दंडक पर वर्णन कर आए हैं उन सब बोलों में समुच्चय पाप कर्म और ज्ञानावरणीयादी ८ कर्मों के भांगा आठ २ पावे इति प्रथमोद्देशा

पूर्वोक्त बांधी शतक के ११ उद्देशोवत् इस शतक

के भी ११ उद्धेशे हैं और प्रत्येक उद्धेशे के बोलों पर उपर लिखे मुजब आठ २ भांगे लगालेना.

इति शतक २८ उद्धेशा ११ समाप्त

थोकड़ा नंबर १२

श्री भगवती सूत्र श० २६

४७ बोल प्रत्येक दंडक पर शतक २६ उद्धेसे पहिले में विवरण करचुके हैं. उन बोलों के जीव (१) एक साथे कर्म भोगवणा मांडिया (सुरूकिया) और एक साथ पूरणा किया (२) एक साथे भोगवणा मांडिया-और विशमता से पूराकिया (३) विशम भोगवण मांडिया और विशम पूराकिया (४) विशम भोगवणा मांडिया और साथे पूराकिया. ये चारो भांगे कहना क्योंकि जीव ४ प्रकार के हैं यथा—

(१) समआयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ. (२) सम आयुष्य और विशम उत्पन्न हुआ (३) विशम आ-युष्य और साथे उत्पन्न हुआ. (४) विशम आयुष्य और

विशम उत्पन्न हुआ. ये चार प्रकार के जीव कौन २ सा भागा पावै सो दिखाते हैं.

(१) सम आयुष्य और साथे उत्पन्न हुआ, जिसमें भागा पहिला स० स० (२) सम आयुष्य और विशम उत्पन्न हुआ जिसमें भागा दूसरा स० वि० (३) विशम आयुष्य और साथ उत्पन्न हुआ जिसमें भागा तीसरा. वि० स० (४) विशम आयुष्य और विशम उत्पन्न हुआ जिसमें भांगा चौथा वि० वि०

ये आयुष्य कर्म की अपेक्षा से चार भांगा होता है. इति उ० १

दूसरा उद्देशा अणंतर उववन्नगा का है जिसमें भागा २ पहिला और दूसरा यहां प्रथम समय की अपेक्षा है इसी माफक चौथा, छट्ठा, और आठवां उद्देशा भी समझ लेना शेष १-३ ५ ७ ६-१०-११ ये सात उद्देशों की व्याख्या सदृश है (चारो भागा पावे) इति श० २६ समाप्त.

थोकड़ा नंबर १३

श्रीभगवति सूत्र श० ३०

समोसरण=अधिकार.

समोसरण चार प्रकार का कहा है यथा १ क्रियावादी २ अक्रियावादी ३ अज्ञानवादी और ४ विनयवादी क्रियावादी के सूयगडांग सूत्र में जो १८० भेद कहे हैं वे केवल मिथ्यादृष्टि है और दशाश्रुत स्कंध में जो क्रियावादी कहे है उन्होंने पेस्तर मिथ्यादृष्टि में आयुष्य बांधा था उसके बाद में सम्यक्त्व प्राप्त किया है और यहां जो क्रियावादी कहे हैं वे सम्यक्दृष्टि हैं.

समुचयजीव में पूर्व जो ४७ बोल २६ में शतक में कह आये हैं उसमें कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ मिथ्यादृष्टि १ एवम् छै बोल में समोसरण ३ अक्रियवादी, अज्ञानवादी, और विनयवादी, इन तीनों समोसरण के जीव चारों गति का आयुष्य बांधे. और इनमें भव्य. अभव्य. दोनों होवे.

ज्ञान ४ और सम्यकदृष्टि १ इन पाचो बोलों में समो-सरण १ क्रियावादी आयुष्य नारकी, देवता, बाधे तो मनुष्य का और मनुष्य, तिर्यच बाधे तो वैमानिक का और नियमा भव्य होय

मिथ्यादृष्टि में समोसरण २ अज्ञान वादी और विनय वादी. आयुष्य का अबधक. और नियम भव्य हो.

मनः पर्यव ज्ञान और नोसंज्ञा में समोसरण १ क्रिया वादी आयुष्य बाधे तो वैमानिक का और नियमा भव्य होय

कृष्ण, नील, कापोत, लेश्या में समो० चारपावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य-होय शेष तीन समो० आयुष्य चारोंगति का बांधे, और भव्याभव्य दोनो होय।

तेजो, पद्म, शुक्ल लेश्या में समो० चार पावे जिस में क्रियावादी आयुष्य मनुष्य वैमानिकको बांधे और नियमा भव्य होय शेष तीन समो० नारकी वर्ज के तीनगति का आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनों होय

अलेशी, केवली, अयोगी, अवेदी, अकषायी, इन पांच बोलों में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य अवधक और नियमा भव्य होय.

शेष २२ बोलो में समोसरण चारों जिसमें क्रियावादी आयुष्य—मनुष्य और विमानिक का बन्धे और तीन समो० और आयुष्य चारों गति का बांधे. क्रिया वादी नियमा भव्य होय बाकी तीनो समोसरण में भव्य अभव्य दोनो होय.

नारकी के पूर्वोक्त ३५ बोलो में कृष्णपची १ अज्ञानी ४ और मित्थ्यादृष्टि में समोसरण ३ पूर्ववत्. आयुष्य मनुष्य त्रियंच का बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय——ज्ञान ४ और सम्यक्‌दृष्टि में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और निश्चय भव्य होय मिश्रदृष्टि समुच्चयवत्. शेष तेवीस बोल में समोसरण चार और आयुष्य मनुष्य त्रियंच दोनोंका बांधे। क्रियावादी नियमा भव्य—बाकी तीनो समोसरण के भव्य अभव्य दोनो होय इसी माफक देवताओं में नवग्रैवेक तक पूर्वोक्त जो जो बोल कह आये है उन सब बोलो में समोसरण नारकी वत् लगा लेना.

पांच अनुत्तरविमान के बोल २६ में समोसरण १ क्रियावादी आयुष्य मनुष्य का बांधे और नियमा भव्य होय,

पृथ्वीकाय, अप्पकाय, और वनास्पतिकाय, में पूर्वोक्त २७ बोलों के जीव. में दो समोसरण पावे अक्रियावादी, और अज्ञानवादी, तेजोलेश्यामें आयुष्य न बांधे शेष बोलोंमें आयुष्य. मनुष्य और त्रियच का बांध भव्य अभव्य दोनों होय. एवम् तेऊकाय, वायुकाय के २६ बोलों में समोसरण २ आयुष्य त्रियच का बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय.

विकलेन्द्री ३ के ३१ बोलों में समोसरण २ अक्रिया वादी और अज्ञानवादी. तीन ज्ञान और सम्यक् दृष्टि आयुष्य न बांधे शेष बोलों में मनुष्य त्रियच दोनो का आयुष्य बांध तीन ज्ञान और सम्यक्दृष्टि नियमा भव्य शेष बोलो के जीव भव्य अभव्य दोनों होय.

त्रियच पचेन्द्री के ४० बोलों में से कृष्णपक्षी १ अज्ञानी ४ और मिथ्यादृष्टिमें समोसरण ३ अक्रियावादी, अज्ञानवादी, और विनय वादी, आयुष्य चारों गति का बांधे भव्य अभव्य दोनों होय.

ज्ञान ४ और सम्यक्दृष्टिमें समोसरण १ क्रियावादी, आयुष्य वैमानिक का बांधे और नियमा भव्य होय.

मिश्रदृष्टि में समोसरण २ विनयवादि और अज्ञानवादि आयुष्य का अबंधक और नियमा भव्य होय। कृष्णलेशी, नील लेशी, कापोत लेशी में समोसरण चारो पावे. जिसमें क्रियावादी आयुष्य का अबंधक और नियमा भव्य होय। शेष तीन समोसरण में चारोगति का आयुष्य बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय. तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी. में समोसरण चारो जिसमें क्रियावादी वैमानिक का आयुष्य बांधे और नियमा भव्य होय। शेष तीन समोसरण नारकी छोड़ कर तीन गति का आयुष्य बांधे और भव्य अभव्य दोनों होय शेष बाईस बोलो में समोसरण ४ जिसमें क्रियावादी वैमानिक का आयुष्य बांधे और नियमा भव्य होय बाकी तीन समोसरण चारो गति का आयुष्य बांधे भव्य अभव्य दोनो होय.

मनुष्य दंडक में पूर्वोक्त जो ४७ बोल कह आये हैं, जिसमें कृष्ण पक्षी, चार अज्ञानी, और मिथ्यादृष्टि में क्रियावादी छोड़कर शेष तीन समोसरण आयुष्य चारो गति

का बाधे और भव्य अभव्य दोनो होय चार ज्ञान और सम्यक्दृष्टि में समौसरण, क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भव्य होय। मिश्रदृष्टि में समौसरण दो अविनयावादी, और अज्ञानवादी आयुष्यका अबंधक और नियमा भव्य होय मनः पर्यव ज्ञान और नो सन्ना में समौसरण एक क्रियावादी आयुष्य वैमानिक देवता का बांधे और नियमा भव्य होय, कृष्णादि ३ लेशो में समौसरण ४ पावै जिसमें क्रियावादी आयुष्य का अबधक और नियमा भव्य होय। शेष तीनो समौसरण चारो गति का आयुष्य बांध और भव्या भव्य दोनो होय तेजो आदि ३ लेशी में समौसरण चारो पावे जिसमें क्रियावादी आयुष्य वैमानिक का बांध और नियमा भव्य होय। शेष तीना समौसरण नरक गति छोड़कर तीनो गतिका आयुष्य बांधे और भव्याभव्य दोनो होय अलेशी, केवली, अजोगी, अवेदी, और अकषाई, में समोसरण क्रियावादी का आयुष्य अबधक और नियमा भव्य होय. शेष बाइस बोला में समौसरण चारों पावै जिसमें क्रियावादी आयुष्य वैमानिका बांध और नियमा भव्य होय। शेष तीनो समौसरण

आयुष्य चारो गति का बांधे और भव्याभव्य दोनों होय

इति शतक तीस उद्देसा १ समाप्त।

बांधी शतक २६ उद्देसा दूसरा अणंतर उववन्नगा का पूर्व कह आये हैं उसी माफक चौवीस दंडको के ४७ बोल इस उद्देस में भी लगालेना. और समोसरण का भांगा प्रथम उद्देसावत् कहेना परन्तु सब बोलो में आयुष्य का अबंधक है क्योंकि यह उद्देसा उत्पन्न होने के प्रथम समय की अपेक्षा से कहा गया है और प्रथम समय जीव आयुष्य का अबंधक होता है. एवम् चौथा छट्ठा, आठवा, ये तीन उद्देसे इस दूसरे उद्देसे के सदृश है. शेष ३-५-७ ९-१०-११ ये छओ उद्देस प्रथमो देसवत् समझलेना—

इति श्री भगवती सूत्र शतक ३० उद्देसा ११ समाप्त

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम्

थोकड़ा नम्बर

कर्म ग्रंथ दूसरा

मूल कर्म आठ हैं जिनकी उत्तर प्रकृति १४८ जिनके नाम अबाधाकाल के थोकड़ा नं० २ में लिख आये हैं वहां देख लेना उन १४८ प्रकृतियों में से बंध, उदय, उदीरणा, और सत्ता किस २ गुणस्थान में कितनी २ प्रकृतिया की है सो लिखते हैं

(प्र) गुणस्थानक किसे कहते हैं?

(उत्तर) जिस तरह शिव (मोक्ष) मंदिर पर चढ़ने के लिये पावड़िया (सीढ़ी) है उसी तरह कर्म शत्रु को गिराने के लिये जीव के शुद्ध, शुद्धतर, शुद्धतम अध्यवसाय विशेष यद्यपि अध्यवसाय असंख्याते हैं, परन्तु स्थूल व्यवहार से १४ कहे हैं यथा मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति सम्यक्दृष्टि४ देशविरति ५ प्रमत्त संयत ६ अप्रमत्त संयत ७ निवृति बादर ८ अनिवृति बादर ९ सूक्ष्म संपराय १० उपशांत मोहनीय ११ क्षीणमोह वीत

राग छद्मस्थ १२ सयोगी केवली १३ और अयोगी केव
१४ ये चवदे गुणस्थानक हैं.

पहिले बताई हुई १४८ प्रकृतियों में से. वर्णादिक
पांच शरीर का बंधन ५ संघातन ५ और मिश्र मोहनीय
सम्यक्त्व मोहनीय १ एवम् २८ प्रकृति कम करने से शे
१२० प्रकृति का समुच्चय बंध है.

(१) मिथ्यात्व गुणस्थानक में १२० प्रकृतियों
से तीर्थंकर नाम कर्म १ आहारक शरीर २ आहारक अंगो
पांग ३ इन तीन प्रकृतियों का बंध विच्छेद होने से बाक
११७ प्रकृतियों का बंध है.

(२) सास्वादन गुणस्थानक में नरक गति १ नरक
युष्य २ नरकानुपूर्वी ३ एकेन्द्री ४ बेइन्द्री ५ तेइन्द्री
चौरिन्द्री ७ स्थावर ८ सूक्ष्म ९ साधारण १० अपर्याप्ता १
हुंडक संस्थान १२ आतप १३ छेवट्ठु संघयण १४ नपुंस
वेद १५ मिथ्यात्व मोहनीय १६ ये सोला प्रकृति का बं
विच्छेद होने से शेष १०१ प्रकृति का बंध है.

(३) मिश्र गुणस्थानक में पूर्व की १०१ प्रकृति
से त्रियंचगति १ त्रियंचायुष्य २ त्रियंचानुपूर्वी ३ निद्र

निद्रा ४ प्रचला प्रचला ५ थीणद्धी ६ दुर्भाग्य ७ दुःस्वर ८ अशुभ ६ अनतानुबंधी क्रोध १० मान ११ माया १२ लोभ १३ ऋषभ नाराच संघयण १४ नाराचसंघयण १५ अर्द्ध नाराच स० १६ कीलिका स० १७ न्यग्रोध संस्थान १८ सादि संस्थान १६ वामन स० २० कुब्ज स० २१ नीचगोत्र२२उद्योतनाम२३अशुभविहायोगति२४स्त्री वेद२५ मनुष्यायु २६ देवायु २७ सत्ताईस प्रकृति छोड़कर शेष ७४ का बंध होय.

(४) अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक में मनुष्यायु १ देवायु य २ तीर्थंकर नाम कर्म ३ य तीन प्रकृतियों का बंध विशेष करे इस वास्ते ७७ प्रकृति का बंध होय.

(५) देशविरति गुणस्थानक पूर्व ७७ प्रकृति कही उसमें से वज्रऋषभनाराचसंघयण १ मनुष्यायु २ मनुष्यगति ३ मनुष्यानुपूर्वी ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध ५ मान ६ माया ७ लोभ ८ औदारिक शरीर ६ औदारिक अंगोपांग १० इन दश प्रकृतियों का अबंधक होने से शेष ६७ प्रकृति बांधे.

(६) प्रमत्त संयत गुणस्थानक में प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ का विच्छेद होने से शेष ६३ प्रकृति बांधे.

(७) अप्रमत्त संयत गुणस्थानक में ५९ प्रकृति का बंध है. पूर्व ६३ प्रकृति कही जिसमें से शोक १ अरति २ अस्थिर ३ अशुभ ४ अयश ५ असाता वेदनीय ६ इन छः प्रकृतियों का बंध विच्छेद करें और आहारक शरीर १ आहारक अंगोपांग २ विशेष बांधे एवम् ५९ प्रकृति का बंध करे. अगर देवायुष्य न बांधे तो ५८ प्रकृति का बंध क्योंकि देवायुष्य. छट्ठे गुणस्थानक से बांधता हुआ यहां आवे. परन्तु सातवें गुणस्थानक में आयुष्य का बंध सुरू न करे.

(८) निवृत्ति बादर गुणस्थानक का सात भाग है जिसमें पहिले भाग में पूर्ववत् ५८ का बंध. दूजे भाग में निद्रा १ प्रचला २ का बंध विच्छेद होने से ५६ का बंध हो. एवम् तीजे, चौथे, पांचवें और छठे भाग में भी ५६ प्रकृति का बंध है. सातवें भाग में. देवगति १ देवानुपूर्वी २ पंचेन्द्री जाति ३ शुभविहायोगति ४ त्रसनाम ५ बादर

६ पर्याप्ति ७ प्रत्येक ८ स्थिर ९ शुभ १० सौभाग्य ११ सुस्वर १२ आदेय १३ वैक्रिय शरीर १४ आहारक शरीर १५ तैजस शरीर १६ कार्मण शरीर १७ वैक्रिय अंगोपांग १८ आहारक अंगोपांग १९ समचतुस्र संस्थान २० निर्माण नाम २१ जिन नाम २२ वरण २३ गंध २४ रस २५ स्पर्श २६ अगुरुलघु २७ उपघात २८ पराघात २९ और उश्वास ३० एवम् तीस प्रकृति का बंध विच्छेद होने से बाकी २६ प्रकृति बांधे.

(९) अनिवृत्ति गुणस्थानक का पांच भाग है पहिले भाग में पूर्ववत् २६ प्रकृति मेसे हास्य १ रति २ भय ३ जुगुप्सा ४ ये चार प्रकृति का बंध विच्छेद होकर बाकी २२ प्रकृति बांधे दूसरे भाग में पुरुषवेद छोड़कर शेष २१ बांधे, तीजे भाग में संज्वलन का क्रोध १ चौथे भाग में संज्वलन का मान २ और पांचवे भाग में संज्वलन की माया ३ का बंध विच्छेद होने से १८ प्रकृति का बंध हो।

(१०) सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थानक में संज्वलन के लोभका अबंधक है इसवास्ते १७ प्रकृति का बंध होय

(११) उपशांत मोह गुणस्थानक में १ शाता वेद-नीय का बंध है. शेष ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावर्णीय ४ अंतराय ५ उच्चैगोत्र १ यशःकिर्ति १ इन १६ प्रकृति का बंध विच्छेद हो.

(१२) क्षीणमोह गुणस्थानकमें १ शातावेदनीयबांधे

(१३) सयोगी केवली गुणस्थानकमें १ शाता वे-दनीय बांधे.

(१४) अयोगी गुणस्थानकमें (अबंधक) बंध नहीं.

इतिबंध समाप्त.

समुच्चय १४८ प्रकृति में से १२२ प्रकृति का ओघ उदय है. बंधकी १२० प्रकृति कही उसमें से समकित मोहनीय १ मिश्रमोहनीय २ ये दो प्रकृति उदय में ज्यादा है क्योंकि इन दो प्रकृतियों का बंध नहीं होता परन्तु उदय है।

(१) मिथ्यात्व गुण स्थानक में ११७ का उदय होय क्योंकि सम्यक्त्व मोहनीय १ मिश्रमोहनी २ जिन नाम ३ आहारक शरीर ४ आहारक अंगोपांग ५ ये पांच का उदय नहीं है.

(२) सास्वादनगुण० १११ प्र० का उदय है. मि थ्यात्वमें ११७ का उदय था उसमें से सूक्ष्म १ साधारण २ अपर्याप्त ३ आताप ४ मिथ्यात्व मोहनीय ५ और नरकानुपूर्वी ६ इन छे. प्रकृतियों का उदय विच्छेद हुवा.

(३) मिश्रगुण० मे १०० प्रकृतिका उदय होय क्योंकि अनंतानुबन्धी चौक ४ एकेंद्री ५ विकलेंद्री ८ स्थावर ७ त्रियचानुपूर्वी १० मनुष्यानुपूर्वी ११ देवानुपूर्वी १२ इन बारे प्रकृतियों का उदय विच्छेद होने से शेष९९ प्रकृति रही. परन्तु मिश्र मोहनीयका उदय होय इस वास्ते १०० प्रकृतिका उदय कहा।

(४) अविरति सम्यक्दृष्टी गुण० में १०४ का उदय होय—क्योंकि मनुष्यानुपूर्वी १ त्रियचानुपूर्वी २ देवानुपूर्वी ३ नरकानुपूर्वी ४ और सम्यक्त्व मोहनीय ५ इन पाच प्रकृतिका उदय विशेष होय और मिश्र मोहनीय का उदय विच्छेद होय. इस वास्ते १०४ प्रकृति का उदय कहा.

(५) देशविरति गुण० में ८७ प्रकृति का उदय होयं क्योंकि प्रत्याख्यानी चौक ४ त्रियंचानुपूर्वी ५ मनुष्यानुपूर्वी ६ नरक गति ७ नरकायुष्य ८ नरकानुपूर्वी ९ देवगति १० देवायुष्य ११ देवानुपूर्वी १२ वैक्रिय शरीर १३ वैक्रियअंगोपांग १४ दुर्भाग्य १५ अनादेय १६ अयश १७ इन सतरे प्रकृतिया का उदय नहीं होता.

(६) प्रमात्त संयतगुण० में प्रत्याख्यानी चौक ४ त्रियंचगति ५ त्रियंचायुष्य ६ निचगोत्र ७ एव आठ का उदय विच्छेद होने से शेष ७९ प्रकृति रही. आहारक और शरीर १ आहारक अंगोपांग २ इन दो का उदय विशेष होयइस वास्ते ८१ प्रकृति का उदय होय.

(७) अप्रमत्त संयत गुण० में. थीणद्धी त्रिक ३ आहारक द्रिक ५ इन पांचका उदय न होय. शेष ७६ प्रकृति का उदय होय

(८) निवृति वादर गुण० में सम्यक्त्व मोहनीय १ अर्द्ध नाराच सं० २ कीलिका सं० ३ छेवट्ठु सं० ४ इन चार को छोड़कर शेष ७२ प्रकृति का उदय होय.

(९) अनिवृत्ति बादर गु० में हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ जुगुप्स ५ भय ६ इनका उदय विच्छेद होने से शेष ६६ प्रकृति का उदय होय.

(१०) सूक्ष्म संपराय गुण० में पुरुषवेद १ स्त्रीवेद २ नपुंसक वेद ३ संज्वलन क्रोध ४ मान ५ माया ६ इन छ का उदय विच्छेद होने से बाकी ६० प्रकृति का उदय होय.

(११) उपशांत मोह गुण० में संज्वलन लोभ का उदय विच्छेद हो बाकी ५९ का ३० हो

(१२) क्षीण मोह गुण० के दो भाग है पहिले भाग में ऋषभ नाराच और नाराच संघयण तथा दूसरे भाग में निद्रा और निद्रा निद्रा एवम् ४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से शेष ५५ का उदय होय

(१३) सयोगी-केवली गुण० में ज्ञानावरणीय ५ दर्शनावरणीय अन्तराय ५ एवम् १४ प्रकृति का उदय विच्छेद होने से ४१ प्रकृति और तिर्थंकर नाम-कर्म को मिलाकर ४२ प्रकृति का उदय होय.

(१४) अयोगी गुण० में १२ प्रकृति का उदय होय मनुष्यगति १ मनुष्यायु २ पंचेन्द्री ३ सौभाग्य नाम कर्म ४ त्रस ५ बादर ६ पर्याप्ता ७ उच्चैगोत्र ८ आदेय ६ यशकीर्ति १० त्रिथंकर नाम ११ वेदनी १२ ये बारे प्रकृतियों का उदय चरम समय विच्छेद होय.

इति उदयद्वार समाप्तम्

अब उदीरणा अधिकार कहते हैं. पहिले गुण स्थानक से छट्ठे गुण स्थानक तक जैसे उदय कहा वैसे ही उदीरणा भी कहनी. और सात में गुण स्थानक से तेरमें गुण स्थानक तक जो २ उदय प्रकृति कही है उसमें से शाता वेदनीय १ अशाता वेदनीय २ और मनुष्यायु ३ ये तीन प्रकृति कम करके शेष प्रकृति रहे सो हरेक जगह कहना. चौदमें गुण स्थानक मे उदीरणा नहीं.

इति उदीरणा समाप्तम् ॥

सत्ता अधिकार

(१) मिथ्यात्व गुण० में १४८ प्रकृति का सत्ता.

(२) सास्वादनगुण० में जिन नाम कर्म छोड़कर १४७ प्र० सत्ता में होय.

(३) मिश्र गुण० में पूर्ववत् १४७ प्र० की सत्ता होय। चौथे अविरति सम्यक्दृष्टि गु० से ११ वें उपशांत मोह गु० तक संभव सत्ता १४८ प्रकृति की हैं. परन्तु आठवें गु० स ११ वें गु० तक उपशम श्रेणी करने वाला अनतानुबंधी ४ नरकायु ५ त्रियचायु ६ इन छे प्रकृतियों की विशयोजना करे इस वास्ते १४२ प्रकृति का सत्ता होय.

क्षायक सम्यक्दृष्टिअचरम शरीरी चौथे से सातवें गु० तक अनतानुबंधी ४ सम्यक्त्वमोहनीय ५ मिथ्यात्वमोहनीय ६ मिश्रमोहनीय ७ इन सात प्रकृतियों को खपावे शेष १४१ प्रकृति सत्ता में होय.

क्षायक सम्यक्दृष्टि चरम शरीरी क्षपक श्रेणी करने वालों के चौथे से नवमें (अनिवृत्ति) गु० के प्रथम भाग तक १३८ प्रकृति की सत्ता रहे. क्योंकि पूर्व कही हुई सात प्रकृतियों के सिवाय नरकायु १ त्रियचायु २ देवायु ३ ये तीन भी सत्ता से विच्छेद करना से।

क्षयोपशम सम्यक्त्व में वर्तता हुआ चौथे से सातवें गुण० तक १४५ प्रकृति की सत्ता होय क्योंकि चरम शरीरी

है इसलिये नरकायु १ त्रियंचायु २ देवायु की सत्ता न रहे।

नवमें गुण० के दूसरे भागमें १२२ की सत्ता स्थावर १ सूक्ष्म २ त्रियंच गति ३ त्रियंचानुपूर्वी ४ नरकगति ५ नरकानुपूर्वी ६ आताप ७ उद्योत ८ थीणद्धी ९ निद्रा निद्रा १० प्रचलाप्रचला ११ एकेन्द्री १२ बेइन्द्री १३ तेरिन्द्री १४ चौरिन्द्री १५ साधारण १६ इन सोले प्रकृतियों की सत्ता विच्छेद होय।

नवमे गुण० के दुसरे भागमें ११४ प्रकृति की सत्ता प्रत्याख्यानी ४ और अप्रत्याख्यानी ४ इन ८ प्रकृति की सत्ता विच्छेद होय.

नवमें गु० के चोथें भाग में ११३ प्रकृति की सत्ता. नपुंसकवेदका विच्छेद हो.

नवमें गु० के पांचवें भाग में ११२ प्र० की सत्ता. स्त्रीवेद का विच्छेद हो.

नवमें गु० के छट्ठे भागमें १०६ प्र० की सत्ता. हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ भय ५ जुगुप्सा ६ इन प्रकृतियों की सत्ता विच्छेद होय.

चैादमें गुण० में पहिले समय ८५ की सत्ता रहै. पीछे
देव गति १ देवानुपूर्वी २ शुभ विहायोगति ३ अशुभ-
विहायोगति ४ गंधद्विक ६ स्पर्श १४ वर्ण १९ रस
२४ शरीर २९ बंधन ३४ संघातन ३९ निर्माण
४० संघयण ४६ अस्थिर ४७ अशुभ ४८ दुर्भा-
ग्य ४९ दुस्वर ५० अनादेय ५१ अयशः कीर्ति ५२
संस्थान ५८ अगुरु लघु ५९ उपघात ६० पराघात ६१
उश्वास ६२ अपर्याप्ता ६३ वेदनी ६४ प्रत्येक ६५ स्थिर
६६ शुभ ६७ औदारिक उपांग ६८ वैक्रिय उपांग ६९
आहारक उपांग ७० सुस्वर ७१ नीचैर्गोत्र ७२ इन
बाहत्तर प्रकृतियों की सत्ता टलने से १३ की सत्ता रहै.
फिर मनुष्यानुपूर्वी का विच्छेद होने से १२ प्रकृति की
सत्ता चरम समय होय. इनका उसी समय क्षय करके
सिद्ध गति को प्राप्त हो । बारह प्रकृतियों के नाम—मनुष्य
गति१ मनुष्यायु २ त्रस ३ बादर ४ पर्याप्ती ५ यशः कीर्ति ६
आदेय ७ सौभाग्य ८ तीर्थंकर ९ उच्चगोत्र १०
पंचेन्द्री ११ और वेदनी १२ इति सत्ता समाप्ता

सेवं भंते सेवं भंते तमेव सच्चम् ।

थोकड़ा नं० १५

श्री उत्तराध्ययन सूत्र अ० ३४

छे, लेश्या का थोकड़ा

लेश्या उसे कहते हैं जो जीव के अच्छे या खराब अध्यवसाय से कर्म दलद्वारा जीव लगावें. वह इस थोकड़ाद्वारा ११ बोलों सहित विस्तारपूर्वक कहेंगे-

११ बोलों के नाम

१ नाम २ वर्ण ३ गंध ४ रस ५ स्पर्श ६ परिणाम ७ लक्षण ८ स्थान ९ स्थिति १० गति ११ च्यवन इति।

(१) नामद्वार-कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या,

(२) वर्णद्वार-कृष्णलेश्या, श्यामवर्ण, जैसे पानी से भरा हुआ बादल, भैंस का सींग, अरीठा, गाड़ी का खंजन, काजल, आंखों की टीकी, इत्यादि ऐसा वर्ण कृष्णलेश्या का समझना।

नीललेश्या–नीलावर्ण, जैसे असोक पता, शुक की पांखें, वड्डूर्यरत्न इत्यादिवत् समझना

कापोतलेश्या–सुर्खी लियेहुए कालारंग-जैसे अलसी का पुष्प कोयल की पांख, पारेवे की ग्रीवा, इत्यादिवत्

तेजोलेश्या–रक्तवर्ण-जैसे हींगलु, ऊगता सूर्य, तोते की चोंच, दीपक की सिखा, इत्यादिवत्

पद्मलेश्या–पीतवर्ण, जैसे हरताल, हलद का टुकड़ा सणवनास्पतिकावर्ण इत्यादिवत् पीला

शुक्ललेश्या–स्वेत वर्ण जैसे संख, अंकरत्न मचकुंद वनस्पति, मोती का हार, चांदी का हार, इत्यादिवत्

(३) रसद्वार–कृष्ण लेश्या का कटुक रस, जैसे कड़वा तूंबा का रस, नींब का रस, रोहिणी वनास्पति का रस, इनसे अनंतगुण कटु

नीललेश्या–का तीखा रस-जैसे सोंठका रस, पीपर का रस, कालीमिरच हस्ती पीपर, इन सबके स्वाद से अनंतगुणा तीखा रस

कापोतलेश्या का खट्टा रस जैसे कच्चा आम, तुंबर वनास्पति, कच्चा कवीठ की खटाई से अनंतगुण खट्टा

तेजोलेश्या का रस—जैसे पका हुआ आम, पका हुआ कपीठ के स्वाद से अनन्तगुणा।

पद्मलेश्या का रस—जैसे उत्तम वारुणी का स्वाद और विविध प्रकार के आसव के रस से अनन्तगुणा।

शुक्ल लेश्या का रस—जैसे खजूर का स्वाद, दाख का स्वाद, खीर, शक्कर, इन से अनन्त गुणा।

(४) गन्धद्वार—कृष्ण, नील, कापोत, इन तीन लेश्याओं की गन्ध जैसे मृतक गाय, कुत्ता, सर्प से अनन्त गुणी दुर्गंध

तेजो, पद्म, शुक्ल, इन तीन लेश्याओं की गन्ध जैसे केवड़ा प्रमुख सुगन्धी वस्तु को पिसने से सुगन्ध हो उस से अनन्त गुणी।

(५) स्पर्श द्वार—कृष्ण, नील, कपोत, इन तीन लेश्याओं का स्पर्श जैसे करोत (आरी) गाय बैल की जिह्वा, साक वृक्ष के पत्र से अनन्त गुणा।

तेजो, पद्म, शुक्ल इन तीनों लेश्याओं का स्पर्श जैसे बूर नामा वनस्पति, मक्खन, सरसों के पुष्प से अनन्त गुणा।

(६) परिणामद्वार—छे लेश्या का परिणाम आयुष्य के तीजे भाग, नवमें भाग, सत्ताईस में भाग इक्यासीवें भाग, दोसौ तंयालीस में भाग में जघन्य उत्कृष्ट समझना।

(७) लक्षणद्वार—कृष्णलेशी का लक्षण पांच आश्रव का सेवन करने वाला, तीनगुप्ति अगुप्ती, छेकाय-का आरंभक, आरंभमें तीव्रपरिणामी सर्वजीवोंका अहित कार्य करने में साहसिक, इसलोक परलोक की संका रहित, निर्दय परिणामी जीव इणवां सूग रहित, अजि-तेन्द्रिय, ऐसे पाप व्यापार युक्त हो तो कृष्णलेश्या के परिणाम वाला समझना।

नीललेश्याका लक्षण—इर्षावत्, कदाग्रही, तपरहित, अज्ञानी विद्यारहित पर जीव को छलने में होसियार, अना-चारी, निर्लज्ज, विषयलंपट, द्वेषभावसहित, धूर्त, आठों-मदसहित, मनोज्ञ स्वादका लंपट, साताग‌वेषी आरंभसे न निवृते सर्वजीवों को अहितकारी, विना सोचे कार्य करने वाला ऐसे पाप व्यापार सहित होय उसको नीललेश्या वाला समझना.

कापोतलेश्या-बांका बोले, बांका कार्य करे, निबुढ़, माया (कपटाई) सरलपणारहित, अपना दोष ढके, मिथ्यादृष्टि, अनार्य, दूसरे को पीड़ाकारी वचन वाले, दुष्ट वचन वाला, चोरी करे, दूसरे जीवोंको सुख सम्पदा देख सके नहीं, ऐसे पापव्यापार युक्त को कापोत लेश्या के परिणाम वाला समझना

तेजोलेश्या—मान, चपलता, कौतूहल और कपटाईरहित, विनयवान, गुरूकी भक्ति करने वाला, पांचोंन्द्रीदमनेवाला, श्रद्धावान, सिद्धांतमणे तपस्या (योग वहन) करे प्रिय धरमा, दृढधर्मी, पापसे डरे, मोक्षकी वांछाकरे, सर्वव्यापार युक्त ऐसे परिणाम वाले को तेजो लेशी समझना।

पद्मलेश्या का लक्षण—क्रोध, मान, माया, लोभ पतला (कमती) है आतमा को दम, राग द्वेष से सात हो मन, वचन काया के योग अपने वसमें हो, सिद्धांत पढ़ना हुआ तप करे, थाड़ा बोले, जितेन्द्रिय हो ऐसे परिणाम वाले को पद्मलेशी समझना।

शुक्ललेश्या का लक्षण—आर्त, रौद्र, ध्यान न ध्यावे धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान ध्यावे प्रशस्त चित्त रागद्वेष रहित

पंच समिति समता त्रण गुप्तिए गुप्ता. सरागी हो या वीतरागी ऐसे गुणोंसहितको शुक्ल लेशी समझना।

(८) स्थान द्वार—छओलेश्याकास्थान असंख्याती अवसर्पिणी उत्सर्पिणी का जितना समय हो अथवा एक लोक जैसा संख्याता लोक का आकाश प्रदेश जितना हो उतने एक २ लेश्या के स्थान समझना।

(९) स्थितिद्वार—१कृष्णलेश्या जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट ३३ सागरोपम, अंतर मुहूर्त अधिक नारकी में जघन्य १० सागरोपम पल्योपम के असंख्यात में भाग अधिक उत्कृष्ट ३३ सागरोपम. त्रियंच (पृथ्व्यादि ९ दंडक) मनुष्य में जघन्य उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त. देवताओं में जघन्य दसहजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यात में भाग।

२ नीललेश्या की समुच्चे स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट १० सागरोपम पल्योपम के असंख्यात में भाग अधिक, नारकी में जघन्य तीन सागरोपम पल्योपमके असंख्यात में भाग अधिक उत्कृष्ट १० सागरोपम पल्यो-पम के असंख्यात में भाग अधिक, त्रियंच, मनुष्य में जघन्य उत्कृष्ट अंतर मुहूर्त, देवताओं में जघन्य पल्योपम

के असख्यात में भाग याने कृष्णलेश्या की उत्कृष्ट स्थिति से १ समय अधिक उत्कृष्ट पल्योपम के असख्यात में भाग.

३ कापोतलेश्या की समुच्चयस्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त, उत्कृष्ट तीन सागरोपम पल्योपम के असख्यात में भागअधिक, नारकी में जघन्य दस हजार वर्ष उत्कृष्ट तीन सागरोपम पल्योपम के असख्यातमें भाग अधिक, मनुष्य, त्रियच, में जघन्य उत्कृष्ट अतर मुहूर्त, देवतामें जघन्य पल्योपम के असख्यातमें भाग याने नीललेश्या की उत्कृष्ट स्थिति से एक समय अधिक उत्कृष्ट पल्योपमके असख्यातमेंभाग

४ तेजोलेश्या की समुच्चय स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त, उत्कृष्ट दो सागरोपम पल्योपम के असख्यातमें भाग अधिक मनुष्य त्रियच, में जघन्य उत्कृष्ट अतर मुहूर्त, देवताओं में जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट दो सागरोपम पल्योपम के असख्यातमें भाग अधिक वैमानिक की अपेक्षा.

५ पद्मलेश्या की समुच्चय स्थिति जघन्य अतर मुहूर्त उत्कृष्ट दस सागरोपम अंतर मुहूर्त अधिक. मनुष्य, त्रियच, में जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त देवतों में जघन्य दो साग-

रोपम पल्योपम के असंख्यात में भाग अधिक (तेजोलेश्या की उत्कृष्ट स्थिति से एक समय अधिक) उत्कृष्ट दस सागरोपम अन्तर मुहूर्त अधिक

६ शुक्ललेश्या की समुच्चय स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट ३३ सागरोपम अन्तर मुहूर्त अधिक मनुष्य, त्रियंच में जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त और मनुष्यों में केवली की जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्त. उत्कृष्ट नव वर्ष ऊणा पूर्व क्रोड वर्ष. देवताओं में जघन्य दस सागरोपम अंतर मुहूर्त अधिक (पेद्मलश्या की उत्कृष्ट स्थिति से १ समय अधिक) उत्कृष्ट तेंवीस सागरोपम अंतर मुहुर्त अधिक.

(१०) गतिद्वार कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोत-लेश्या ये तीनों अधर्म लेश्या हैं दुर्गतिमें उत्पन्न हों.

तेजो पद्म और शुक्ल लेश्या ये तीनों धर्मलेश्या कहलाती है. सुगति में उत्पन्न हों.

(११) चयवनद्वार. सब संसारी जीवों को परभव जिस गति में जाना हो मरते वक्त उस गति की लेश्या

अतर मुहूर्त पहिले आती है. और उसकी स्थितिकेपहिले समय और छेल्ले समय में मरण नहीं होता और विचले समयों में मरण होता है जैसे पहिले आयुष्य बधा हुआ होतो उसी गति की लेश्या और अगर आयुष्य न बाधा होतो मरण पहिले अतर मुहूर्त स्थिति में जो लश्या वर्तती है. उसी गतिका आयुष्य बाधे जिस गति में जाना हो उसी के अनुसार लश्या आनेके बाद अतर मुहूर्त वह लेश्या परिणमें और अतर मुहूर्त बाकी रहे तब जीव काल करके परभव में जावे इति ।

हे भव्य आत्माओ. इन लेश्याओं के स्वरूपको विचार कर अपनी २ लेश्या को हमेशा प्रशस्त रखने का उपाय करो

इति लेश्याधार समाप्तम्

सेव भते सेव भंत तमेव सचम्

थोकड़ा नंबर १८

श्रीभगवती सूत्र श० १ उ० २

सचिट्ठण काल का थोकड़ा

सचिट्ठण काल कितने प्रकार का है? चार प्रकार का यथा—नारकी सचिट्ठणकाल, त्रियंच स०, मनुष्य स०, देवता स०,

नारकी सचिट्ठणकाल कितने प्रकार का है? तीन प्रकार का. यथा--सून्यकाल, असून्यकाल, मिश्रकाल, सून्यकाल उसे कहते हैं कि नारकी का नेरिया नारकी से निकल कर अन्य गति में जाकर फिर नारकी में आवे और पहिले जो नारकी में जीव थे उसमें का १ भी जीव न मीले तो. उसे सुन्यकाल, और जिन जीवों को छोड़-कर गया था वे सब जीव वहीं मिलें एक भी कम ज्यादा